राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 की अपेक्षाओं के अनुरूप शिक्षक–शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक छात्राध्यापक को इस प्रकार समर्थ बनाना है कि वह–

- बच्चों का ख्याल रख सके और उनके साथ रहना पसंद करे।
- सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक संदर्भों में बच्चों को समझ सके।
- व्यक्तिगत अनुभवों से अर्थ निकालने को अधिगम अर्थात सीखना समझे।
- सीखने के तरीके समझे, सीखने की अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा करने के संभावित तरीके जाने तथा सीखने के प्रकार, गति तथा तरीकों के आधार पर विद्यार्थियों की विभिन्नताओं को समझे।
- ज्ञान को, चिंतनशील सीखने की सतत् उभरती प्रक्रिया माने।
- ज्ञान को पाठ्यपुस्तकों के बाह्य ज्ञान के रूप में न देखकर साझा संदर्भों और व्यक्तिगत संदर्भों में उसके निर्माण को देखे।
- उन सामाजिक, पेशेवर और प्रशासनिक संदर्भो के प्रति संवेदनशील हो जिनमें उसे काम करना है।
- ग्रहणशील हो और लगातार सीखता रहे, समाज और विश्व को बेहतर बनाने की दिशा में अपनी जिम्मेदारियों को समझ सके।
- वास्तविक परिस्थितियों में न केवल समझदारी वाले रवैये को अपनाने की उपयुक्त योग्यता का विकास करे बल्कि इस तरह की परिस्थितियों का निर्माण करने के भी योग्य बने।
- उसके भाषायी ज्ञान और दक्षता का आधार ठोस हो।
- व्यक्तिगत अपेक्षाओं, आत्मबोध, क्षमताओं, अभिरूचियों आदि की पहचान कर सके।
- अपना पेशेवर उन्मुखीकरण करने के लिए सोच समझ कर प्रयास करता रहे। यह विशेष परिस्थितियाँ अध्यापक के रूप में उसकी भूमिका तय करने में मदद करेंगीं।

डिप्लोमा इन एजुकेशन (डी.एड.)

(शिक्षा में पत्रोपाधि)

दूरस्थ शिक्षा हेतु स्व-अधिगम सामग्री

भाषा (तृतीय भाषा संस्कृत) व भाषा शिक्षण

द्वितीय वर्ष

प्रकाशन वर्ष -2013

निःशुल्क वितरण हेतु

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीगसढ़, रायपुर

डिप्लोमा इन एजुकेशन (डी.एड.)

(शिक्षा में पत्रोपाधि)

दूरस्थ शिक्षा हेतु स्व–अधिगम सामग्री

भाषा (तृतीय भाषा संस्कृत)व भाषा शिक्षण

द्वितीय वर्ष

प्रकाशन वर्ष–2013

निःशुल्क वितरण हेतु

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,

छत्तीसगढ़, रायपुर

प्रकाशन वर्ष – 2013
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् रायपुर छत्तीसगढ़

राज्य कार्यक्रम प्रभारी
अनिल राय (भा.व.से)
संचालक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

राज्य समन्वयक
ए.लकड़ा,
संयुक्त संचालक,राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

पाठ्य सामग्री समन्वय
आर. के. वर्मा
यू.के. चक्रवर्ती
डेकेश्वर प्रसाद वर्मा

विषय संयोजक
बी.पी. तिवारी
डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् रायपुर उन सभी लेखकों/प्रकाशकों के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता है जिनकी रचनाएँ/आलेख इस पुस्तक में समाहित है।

प्राक्कथन

''अनिवार्य एवं निःशुल्क बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009'' के निर्देशानुसार समस्त अप्रशिक्षित सेवारत प्रारंभिक शिक्षकों को 5 वर्ष की समय सीमा में प्रशिक्षण प्राप्त किया जाना है। राज्य के समक्ष यह एक बड़ी चुनौती है,साथ ही उन शिक्षकों के लिए परस्पर साथ आने का,अपने अनुभवों को साझा करने का सुअवसर है जो पूर्व से ही स्कूलों में बच्चों के साथ कार्य कर रहे हैं। इसी अनुक्रम में राज्य में सेवारत अप्रशिक्षित प्राथमिक शिक्षकों को डी.एड. प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर डी.एड. दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से उपलब्ध कराया जा रहा है।

समाज में समय अनुरूप हो रहे वृहद सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों के फलस्वरूप शिक्षाप्रणाली में शिक्षकों से अपेक्षाएँ बदलती रहती हैं। आज के संदर्भों में शिक्षक की भूमिका में काफी बदलाव आया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 ने भी शिक्षकों की बदलती भूमिका को रेखांकित किया है। आज एक शिक्षक के लिए जरूरी है कि वह बच्चों को जाने, समझे, कक्षा में उनके व्यवहार को समझे, उनके सीखने के लिए उपयुक्त माहौल तैयार करे, उनके लिए उपयुक्त सामग्री व गतिविधियों का चुनाव करे, बच्चे की जिज्ञासा को बनाए रखे, उन्हें अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करे व उनके अनुभवों का सम्मान करे। शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह शालेय संदर्भ में उभरती हुई मांगों एवं आवश्यकताओं के मध्य सामंजस्य स्थापित करते हुए विद्यार्थी के प्रश्न, सीखने की प्रक्रिया, विषयवस्तु तथा शिक्षण के संबंध में अपने आप को निरंतर अद्यतन करते रहे।

शिक्षकों को इस बदलती भूमिका के लिए बेहतर तरीके से तैयार करने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए राज्य में डी.एड. का नवीन पाठ्यक्रम एवं पाठ्यसामग्री तैयार की गई है। सेवापूर्व प्रशिक्षण कार्यक्रम में इस पाठ्यसामग्री की स्वीकार्यता एवं गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए इसे स्व–अधिगम सामग्री में परिणित कर सेवारत अप्रशिक्षित शिक्षकों के लिए मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए तैयार किया गया है।

यह कोर्स स्वअधिगम पर आधारित है इसके लिए यह आवश्यक है कि पाठ्यसामग्री को आप गंभीरता से पढ़ें, चिंतन करें, चर्चा करें एवं अपने दैनिक अनुभवों से जोड़ते हुए उपयोग करें। इसे रटने की अपेक्षा जीवन उपयोगी बनाएँ।

इस पाठ्यसामग्री का फोकस विषयवार समझ विकसित करने के साथ–साथ एक एकीकृत समझ विकसित करने में है, जो कि किसी विशेषीकृत शिक्षण विधि के आधार पर न होकर समग्र शिक्षण विधि जो बच्चों को सीखने में मदद करे, के आधार पर हो। प्रथम वर्ष की पाठ्य सामग्री का अध्ययन करते हुए आपने इस पाठ्य सामग्री की उपयोगिता का अनुभव किया होगा। द्वितीय वर्ष की स्व–अधिगम पाठ्य सामग्री इसकी अगली कड़ी के रूप में आपके समक्ष है।

द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम में इन विषयों को सम्मिलित किया गया है–

1. गणित व गणित शिक्षण।
2. शिक्षा दर्शन–व्यक्ति सीखना व शिक्षा।
3. भाषा (हिन्दी) व भाषा शिक्षण।
4. भाषा (द्वितीय भाषा अंग्रेजी) व भाषा शिक्षण।
5. भाषा (तृतीय भाषा संस्कृत) व भाषा शिक्षण।
6. पर्यावरण अध्ययन व विज्ञान शिक्षण
7. आधुनिक विश्व के संदर्भ में भारतीय शिक्षा

चयनित पाठ्यसामग्री में कुछ लेखकों/प्रकाशकों की पाठ्यसामग्री प्रशिक्षार्थियों के हित को ध्यान में रखकर ज्यों की त्यों ली गई है। कहीं–कहीं स्वरूप में परिवर्तन भी किया गया है, कुछ सामग्री अंग्रेजी की पुस्तकों से लेकर अनुदित की गई हैं। हमारा प्रयास यह है कि प्रबुद्ध लेखकों की लेखनी का लाभ हमारे भावी शिक्षकों को मिल सके। इग्नू और एन.सी.ई.आर.टी. सहित जिन भी लेखकों/प्रकाशकों की पाठ्यसामग्री किसी भी रूप में उपयोग की गई है, हम उनके हृदय से आभारी हैं। हम विद्या भवन सोसायटी उदयपुर, दिगंतर जयपुर, एकलव्य भोपाल, अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन बैंगलुरू, आई.सी.आई.सी.आई. फाउण्डेशन पुणे, आई.आई. टी. कानपुर, छत्तीसगढ़ शिक्षा संदर्भ केन्द्र रायपुर के आभारी हैं जिनकी टीम ने एस.सी.ई.आर. टी.छ.ग. और डाइट के संकाय सदस्यों के साथ मिलकर पठन–सामग्री को वर्तमान स्वरूप प्रदान किया।

स्व–अधिगम पाठ्यसामग्री तैयार करने में प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सहयोगियों का हम पुनः आभार व्यक्त करते हैं। पाठ्यक्रम तैयार करने तथा पाठ्यसामग्री के संकलन व लेखन कार्य से जुड़े लेखन समूह सदस्यों को भी हम धन्यवाद देना चाहेंगे जिनके परिश्रम से पाठ्य सामग्री को यह स्वरूप दिया जा सका। पाठ्य–सामग्री के संबंध में शिक्षक–प्रशिक्षकों, प्रशिक्षार्थियों के साथ–साथ अन्य प्रबुद्धजनों, शिक्षाविदों के भी सुझावों व आलोचनाओं की हमें अधीरता से प्रतीक्षा रहेगी जिससे भविष्य में इसे और बेहतर स्वरूप दिया जा सके।

कोई भी पाठ्यक्रम सम्पूर्ण नहीं होता इसमें सुधार की असीम सम्भावनाएं होती है तथा निरंतर परिवर्तन जीवित होने का एक प्रमाण भी है। अतः आपसे अनुरोध है कि सम्पूर्ण पाठ्य–सामग्रियों को पढ़कर अपने सुझाव हमें अवश्य भेजें ताकि पाठ्यक्रम में आवश्यक सुधार कर इसे जीवित रखा जा सके।

धन्यवाद।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद्, छत्तीसगढ़,रायपुर

स्वाधिगम 'संस्कृत भाषा शिक्षण'

भूमिका : – दूरस्थ शिक्षा के अंतर्गत संस्कृत विषय का अध्यापन करने वाले शिक्षकों के लिए संस्कृत भाषा में स्वाधिगम आधारित प्रशिक्षण संदर्शिका का निर्माण किया गया है। इससे शिक्षकों में संस्कृत शिक्षण की दक्षता में वृद्धि होगी। इस संदर्शिका के माध्यम से यह प्रयास किया गया है, कि शिक्षक केवल परम्परागत शिक्षण विधियों पर ही अवलम्बित न रहें, अपितु शिक्षण के नवीन आयामों के प्रति छात्रों में जिज्ञासा उत्पन्न करें तथा वे नवाचारों से उन्हें परिचित करावें। विद्यार्थी केवल श्रोता मात्र न हों, बल्कि उसकी सक्रिय सहभागिता हो। अतएव इस संदर्शिका में डी.एड. पाठ्यक्रम में निहित विषय को गतिविधि आधारित बनाने का प्रयास किया गया है। जिससे विद्यार्थी स्वाधिगम के लिए प्रोत्साहित हो सकें।

वर्तमान में पाठ्यपुस्तक आधारित प्रणाली संस्कृत विषय अध्यापन में ज्यादा प्रचलित है। इसमें शिक्षक तो सक्रिय रहता है किन्तु विद्यार्थी महज श्रोता व दर्शक मात्र होता है। प्रस्तुत संदर्शिका के माध्यम से अध्यापन करने में छात्रों की भूमिका बदल जावेगी और छात्र अधिकाधिक रूचि लेकर सीखने में तत्परता प्रदर्शित कर सकेंगे। उन्हें यह अहसास होगा, कि हम स्वयं सीख रहे हैं। अतः स्वाधिगम आधारित यह संदर्शिका संस्कृत भाषा शिक्षण के लिए अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगी। यह शिक्षकों के लिए भी उनके विषय शिक्षण के लिए न केवल उपयोगी वरन कक्षा अध्यापन के लिए एक नवाचार युक्त शिक्षण से परिपूर्ण होगा।

निश्चय ही यह संदर्शिका संस्कृत शिक्षक व शिक्षार्थी दोनों के लिए लाभकारी सिद्ध होगी।

1. आवश्यकता : संस्कृत एक प्राचीन भाषा है। इसमें ज्ञान का असीम भण्डार हैं। संस्कृत में हमारी सांस्कृतिक विरासत समाहित है। नैतिक व राष्ट्रीय मूल्य संस्कृत में विद्यमान है। अतएव छात्रों में मूल्य एवं सांस्कृतिक शिक्षा के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है। संस्कृत शिक्षण हेतु आवश्यक बिन्दु अधोलिखित है –

1. छात्रों में नैतिक मूल्यों का विकास।
2. सांस्कृतिक मूल्यों का ज्ञान।
3. राष्ट्रप्रेम की भावना।
4. संस्कृत साहित्य में व्याकरण का ज्ञान।

2. अवधारणा

1. सरल संस्कृत शिक्षण के माध्यम से संस्कृत का ज्ञान।
2. स्वाधिगम से संस्कृत शिक्षण कराना।
3. छात्रों में भाषायी कौशलों का विकास करना।
4. छात्रों की सक्रिय सहभागिता।

स्वाधिगम हेतु संस्कृत के सामान्य उद्देश्य–

1. संस्कृत ध्वनियों से बने वाक्यों को शुद्ध उच्चारण करना।
2. सरल शब्दों का शुद्ध वर्तनी में लेखन करना।
3. पाठ्य पुस्तक को पढ़कर सरल गद्यांश का शुद्ध वाचन कर सकना।
4. संस्कृत में सरल प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम बनाना।
5. संज्ञा सर्वनाम क्रिया विशेषण आदि की समझ विकसित करना।
6. वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा व सर्वनाम के साथ क्रिया पदो का अन्वय करना।
7. अनुस्वार, अनुनासिक विसर्ग आदि ध्वनियों को पहचानना।
8. सुभाषित व नीति श्लोकों को कण्ठस्थ करना।
9. सरल वाक्यों के भावों को ग्रहण करना।
10. संस्कृत भाषा में रसानुभूति कराना।

संस्कृत अधिगम के सामान्य उद्देश्य के अंतर्गत– शुद्ध उच्चारण करना, शुद्ध वर्तनी लेखन करना, गद्यांश का शुद्ध वाचन करना, श्लोकों को कण्ठस्थ करना, व्याकरणिक तत्वों का ज्ञान प्राप्त करना, सरल वाक्यों का भाव ग्रहण करते हुए संस्कृत भाषा में रसानुभूति कर सकना आदि।

स्वाधिगम संस्कृत के विशिष्ट उद्देश्य–

1. संवाद क्षमता में दक्षता विकसित करना।
2. श्लोकों के सस्वर वाचन की योग्यता बढ़ाना।
3. संस्कृत बोध के साथ संस्कृत गद्यांश को पढने की क्षमता को विकसित करना।
4. संस्कृत भाषा एवं साहित्य से प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करना।
5. सौदर्य बोध व सृजनशीलता का विकास करना।
6. राष्ट्र प्रेम की भावना का विकास करना।
7. अशुद्ध संस्कृत वाक्यों को शृद्ध करना।
8. संस्कृत श्लोकों में निहित सूक्तियों एवं सुभाषितों के भाव को समझ कर अर्थ करना।
9. धातुओं के साथ वर्तमान कालिक, भूतकालिक, उत्तरकालिक व पूर्वकालिक प्रत्ययों को जोड़ने की क्षमता विकसित करना।
10. पठितांश को जीवन मूल्यों में उतारना।

स्वाधिगम के अन्तर्गत संवाद क्षमता, सस्वर वाचन की योग्यता, अर्थ बोध ग्रहण की क्षमता, साहित्य के प्रति जिज्ञासा,सौंदर्य बोध, कल्पना बोध, सृजनशीलता चिंतनशीलता जीवन मूल्यों की समझ व राष्ट्रीय चेतना के विकास हेतु उपयुक्त बिन्दु निश्चय ही संस्कृत भाषा शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्यों की सार्थकता को निरूपित करेगी।

विषय–सूची

इकाई	अध्याय	पेज न.
इकाई–I	**संस्कृत भाषा शिक्षण–**	**01-5**
1	संस्कृत भाषा को व्यवहारपरक कैसे बनाएँ	
2	संस्कृत भाषायी कौशलों का विकास कैसे हो?	
3	संस्कृत में वार्तालाप करने की क्षमता कैसे विकसित करें	
4	संस्कृत में नैतिक मूल्यों का विकास कैसे करें	
5	संस्कृत भाषा के प्रति बच्चों में अभिरुचि कैसे सृजित करें	
इकाई–II	**आधार पाठ्यवस्तु मनोरमा (संस्कृत कक्षा 8)**	**6-12**
6	सरल संस्कृत में गद्य पठन	
7	सरल संस्कृत में पद्य पठन	
8	लघु कथा/ आरव्यायिकाओं को सरल संस्कृत में कैसे अवबोध कराएँ	
9	संस्कृत के प्रति बच्चों में अभिरूचि बढ़ाने हेतु स्वस्तिवाचन/मङ्गलाचरण कैसे करावें	
10	मित्र/माता/गुरू को सरल संस्कृत में पत्र कैसे लिखें?	
इकाई–III	**व्याकरण का अर्थ**	**13-27**
11	भाषा की शुद्धता हेतु संस्कृत भाषा में ध्वनि के स्वरूप को कैसे निर्धारित करें।	
12	संस्कृत के संधि व समास युक्त शब्दों को सरल कर कैसे बोध कराएँ।	
13	बच्चों को संस्कृत कारकों का बोध कराते हुए वाक्य प्रयोग की अवधारणा को कैसे पुष्ट करें ?	
14	सरल संस्कृत में क्रिया, पुरूष काल व लिङ्ग का प्रयोग कैसे करावें ?	
15	सरल संस्कृत में वाच्य परिवर्तन कैसे करावें	
16	गद्य शिक्षण अथवा पद्य शिक्षण में आये अव्यय अथवा उपसर्गों का बोध कराते हुए बच्चों को सरल संस्कृत कैसे सिखाएँ ?	
17	सरल संस्कृत में कृदन्तों का व्यावहारिक प्रयोग कैसे करावें।	
इकाई–IV		
	खण्ड (अ) काव्यतत्व (काव्यतत्वों की जानकारी)	**28-36**
18	मात्रिक व वर्णिक छंदों का कैसे बोध करावें।	
19	अनुष्टुप, उपेन्द्रवजा, द्रुतविलंबित तथा वसंततिलका आदि छंदों का ज्ञान बच्चों को कैसे कराएँ ?	
20	अनुप्रास, यमक व श्लेष जैसे अलंकारों के माध्यम से बच्चों में काव्यगत सौंदर्यानुभूति का बोध कैसे करावें।	

21 करूण रस तथा वीर रस के माध्यम से
काव्यगत रसानुभूति कैसे करावें।
22 सरल संस्कृत वाक्यों में लोकोक्ति/मुहावरें का प्रयोग कर संस्कृत के भाव
को कैसे सुदृढ़ीकरण करें।

खण्ड (ब) मूल्यांकन

23 बच्चों के ज्ञान, बुद्धि व सृजनात्मकता के लिए संस्कृत में मूल्यांकन
24 वर्तमान संस्कृत मूल्यांकन प्रणाली (N.C.F.)
25 विद्यालय में संस्कृत मूल्यांकन की प्रक्रिया।
26 बच्चों में हिन्दी से संस्कृत और संस्कृत से हिन्दी अनुवाद क्षमता कैसे विकसित करें।

इकाई–V संस्कृत की पाठयोजनाएँ **37-43**

27 हरबर्टीय पंञ्चपदीय पाठयोजना के माध्यम से बच्चों में अनुकरण वाचन, बोध
प्रश्न, कक्षा व गृहकार्य की क्षमता कैसे बढ़ाएँ ?
28 बालकेन्द्रित पाठयोजना के माध्यम से बच्चों का मूल्यांकन कैसे करें।
29 रचना पाठयोजना के माध्यम से बच्चों में किन–किन व्याकरणिक
अवधारणाएँ पुष्ट की जा सकेंगी।

इकाई–VI संस्कृत निबंध **44-51**

30 संस्कृत निबंध के माध्यम से बच्चों में सरल निबंध लेखन क्षमता का
विकास कैसे करें।
31 संस्कृत निबंध के माध्यम से बच्चों में सुलेख क्षमता को कैसे बढ़ाएँ।
32 संस्कृत निबंध के माध्यम से सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों का विकास कैसे करें।

भाषा व भाषा शिक्षण संस्कृत
स्वाधिगम सामग्री

इकाई 01. संस्कृत भाषा शिक्षण

(i) संस्कृत भाषा को व्यवहारपरक कैसे बनाएँ– संस्कृत भाषा को व्यवहार परक बनाना आवश्यक है, इससे छात्रों में संस्कृत सीखने के प्रति रूचि जागृत होगी तथा स्वयं सीखने की प्रवृति का विकास होगा। इससे संस्कृत सीखना आनंददायी भी होगा। संस्कृत को व्यवहार परक बनाने के लिए कुछ स्वाधिगम इस प्रकार है–

(1) छात्रों के बोलचाल की प्रयुक्त भाषा में संस्कृत का प्रयोग–यथा छत्तीसगढ़ी में 'राँधना' संस्कृत के रन्ध धातु से बना हुआ शब्द 'रन्धयति' से मिलता है। इसी प्रकार असनान–स्नान, उपास–उपवास आदि। दैनिक जीवन के उपयोग में आने वाले अन्य शब्द यथा लिखना–लिख्, चरना–चर्, करसा–कलश, अंगरी–अङ्गुली अंजरी–अञ्जलिः इसी प्रकार से अन्यान्य बहुत से शब्द हैं जो उनके दैनिक जीवन में व्यवहृत होते हैं, किन्तु उन्हें संस्कृत से सन्निकटता का ज्ञान नहीं होने के कारण वे इसे जान नहीं पाते हैं, ये सभी संस्कृत से निःसृत शब्द है। यदि छात्रों को उनके व्यावहारिक जीवन में प्रयोग आने वाले वस्तुओं के बारे में सूची बनाने के लिए कहा जाए तथा बाद में संस्कृत से उनकी समीपता का पता लगाया जाए तो अनेक शब्द संस्कृत के निकट होंगे।

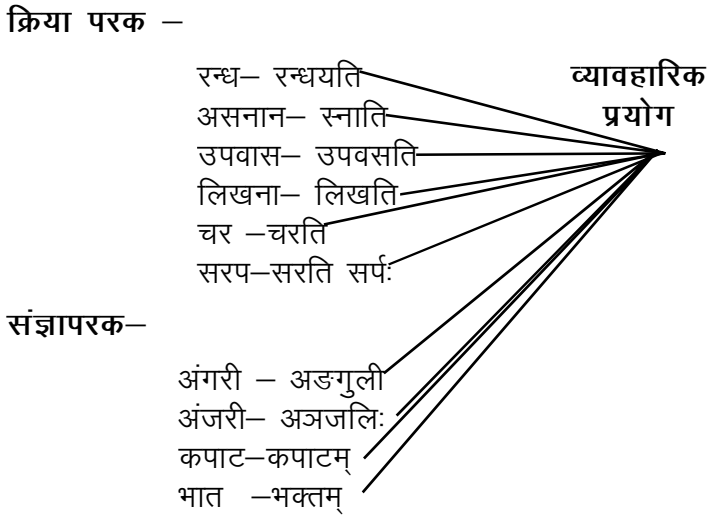

(2) बच्चों में भाषायी कौशलों का विकास – संस्कृत में सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना छात्रों में विकसित करना होता है। छात्र स्वयं उक्त कौशलों का विकास कर सके इसके लिए स्वाधिगम इस प्रकार हैं –

(i) सुनने का अभ्यास – संस्कृत की छोटी–छोटी कहानियों को सुनाकर श्रवण का अभ्यास कराया जा सकता है। पश्चात् छात्रों को सुनाने का अवसर शिक्षक के द्वारा दिया जाए, यह कार्य छात्रों के द्वारा ही सम्पन्न कराया जावें, इससे सही श्रवण क्षमता का विकास होगा।

(ii) बोलने का अभ्यास – संस्कृत के किसी सरल अन्विति का चयन कर उसे शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराया जाए इससे उनमें शुद्ध उच्चारण क्षमता का विकास होगा।

(iii) पढ़ने का अभ्यास – छात्रों को शिक्षक द्वारा स्वयं के वाचन के पश्चात् पढ़ने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया जावे इसके लिए सरल कहानियाँ एवं सुभाषित श्लोक पठन अभ्यास के लिए उपयुक्त होगा।

(iv) लिखने का अभ्यास – संस्कृत का शुद्ध लेखन छात्रों के लिए एक बड़ी समस्या है इसका कारण यह है, कि हम छात्रों को लिखने का पर्याप्त अवसर प्रदान नहीं करते। शुद्ध लेखन के अभ्यास के लिए छात्रों को संस्कृत में गृहकार्य प्रतिदिन दिया जावे इससे उनमें संस्कृत लिखने की क्षमता का विकास होगा। शिक्षक श्रुतलेख लिखाकर भी छात्रों में संस्कृत लेखन का अभ्यास करा सकते हैं। यथा –

विलक्षणा बुद्धिः

पुरा जम्बुवृक्षे एको वानरः प्रतिवसति स्म। सः नित्यं तस्य फलं खादति स्म। तस्य अधः एको मकरः प्रतिदिनम् आगच्छति स्म। वानरं दृष्ट्वा सः व्यचारयत्। सः मधुरं फलं प्रतिदिनं खादति। अतः तस्य हृदयं अपि अति मधुरं भविष्यति। मदीयायाः भार्यायाः कृते उपहार स्वरूपं तस्य हृदयं कथं प्राप्नुयात् इति चिन्तयति। येनकेन प्रकारेण विश्वास प्राप्य वानरं स्वपृष्ठे धृत्वा पत्नीं प्रति गच्छति। अत्युत्साहेन उत्साहेन मार्गे मकरः कथयति–मित्र! तव हृदयं पत्नीं दातुं नयामि। एतत् श्रुत्वा वानरः वदति – भो मित्र! अहं तु स्वकीयं हृदयं वृक्षोपरि स्थापितम् अतः त्वं माम् पुनः जम्बूवृक्षं समीपं नयतु। मकरः तस्य वचनं पालयति। यदा वानरः वृक्षं समीपं आगच्छति तदा शीघ्रं तस्य पृष्ठात् कूर्दयित्वा वृक्षोपरि आरोहति। एवं कथयति मित्र ! त्वं मूखोऽसि गृहं प्रत्यागच्छ, नाहं हृदयं दास्यामि। एतश्श्रुत्वा मकरः भृशं खिन्नमभवत्। ईदृशः स वानरः स्वकीयया विलक्षणबुद्धया स्वरक्षणम् अकरोत्।

03. संस्कृत में वार्तालाप करने की क्षमता कैसे विकसित करें ?

संस्कृत में वार्तालाप करना संस्कृत छात्रों के लिए आवश्यक है। इसके लिए छात्रों को अभ्यास का अवसर दिया जाना होगा। अभ्यास के अभाव में संस्कृत वार्तालाप संभव नहीं है। संस्कृत बोलने के लिए स्वाधिगम के अंतर्गत निम्नांकित उपाय अपना सकते हैं –

संस्कृत वार्तालाप क्षमता का विकास

1. पर्याप्त अभ्यास कराया जाए।
2. कक्षागत गतिविधि करायी जाए।
3. छात्र आपस में संस्कृत भाषा में वार्तालाप करें।

(1) कक्षा में अभ्यास – संस्कृत शिक्षक द्वारा कक्षा में छात्रों को संस्कृत में संभाषण का अभ्यास कराया जावे, इसके लिए छात्रों को अपना परिचय सरल संस्कृत में देने हेतु प्रोत्साहित करें।

(2) चित्र द्वारा अभ्यास – शिक्षक श्यामपट में – पेड़ का चित्र बनाकर उसमें फल, फूल, शाखा, पत्ते, पक्षी आदि बनाकर उसके बारे में छात्रों से संस्कृत में बोलने हेतु कहें। इस प्रकार अन्यान्य चित्र बनाकर कक्षा के छात्रों को अवसर दिया जाए।

(3) छात्रों में परस्पर संस्कृत वार्तालाप – छात्रों को इस तरह प्रोत्साहित किया जावे कि वे आपस में सरल संस्कृत भाषा में वार्तालाप कर सकें। छात्र अपने मित्र या सहपाठी से संस्कृत में बोलने का अभ्यास कर सके। उदाहरणार्थ – वार्तालाप की शुरूआत इस प्रकार हो सकती है –

प्रथमः	–	मित्र ! त्वं कुत्र गच्छसि ?
द्वितीयः	–	मित्र ! अहं विद्यालयं गच्छामि।
प्रथमः	–	त्वं कस्यां कक्षायां पठति ?
द्वितीयः	–	अहं नवम्यां कक्षायां पठामि।
प्रथमः	–	मित्र ! विद्यालये कति छात्राः पठन्ति।
द्वितीयः	–	मित्र ! अस्माकं विद्यालये पञ्चाशत्छात्राः पठन्ति।

प्रथमः	–	किम् ? विद्यालये उद्यानम् अस्ति।
द्वितीयः	–	आम् । एकं रम्यं उद्यानं विद्यालयस्य पूर्वभागे अस्ति।
प्रथमः	–	मित्र ! क्रीड़ागनम् अस्ति ना वा। ?
द्वितीयः	–	मित्र ! विशालः क्रीड़ागनम अस्ति।
प्रथमः	–	मित्र ! नमस्कारः श्वः पुनर्मिलामः।
द्वितीयः	–	नमस्कारः मित्र।

04. संस्कृत में नैतिक मूल्यों का विकास कैसे करें ? – संस्कृत भाषा नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण भाषा है। संस्कृत की सूक्तियाँ, नीति वचनानि, सुभाषित श्लोकों का संग्रह, नैतिक मूल्यों की अमूल्य निधि है। कुछ स्वाधिगम के लिए इस प्रकार की गतिविधि किया जाना उपयुक्त होगा –

(i) सुभाषित श्लोक वाचन – कक्षा में सुभाषित श्लोकों का अर्थसहित वाचन का अभ्यास हो। इससे श्लोकों में निहित सदाचार के मूल्यों को छात्र ग्रहण कर सकेंगे।

!सुभाषितम्!
पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि
जलमन्नं सुभाषितम्।
मूढ़ैःपाषाण खण्डेषु
रत्नसंज्ञा विधीयते।।

(ii) संस्कृत के नीतिवचन, नीति शतकम्, नीति श्लोक आदि का छात्रों से अर्थसहित कण्ठस्थीकरण अभ्यास कराया जावे, जिससे छात्र उन श्लोकों, वचनों में समाहित नीतिपूर्ण बातों को अपने व्यावहारिक जीवन में उतार सकें।

यथा – **"अश्वमेघसहस्राणि सत्यं च तुलया धृतम्।**
अश्वमेधसहस्राद्धि सत्यमेवातिरिच्यते।।"

उक्त श्लोक में सत्य की महत्ता प्रतिपादित की गई है। यदि छात्र इस श्लोक के ज्ञान को अपने व्यावहारिक जीवन में अपनाते हैं तो उसमें सदैव सत्याचरण का भाव ही जागृत होगा। संस्कृत के सभी नीति श्लोक किसी न किसी मूल्य की शिक्षा अवश्य देता है।

(iii) सूक्ति वाचन – छात्रों को सूक्ति वाचन का अर्थ सहित अभ्यास कराया जावे। संस्कृत की सूक्तियाँ, नैतिक ज्ञान से परिपूर्ण है। छोटी–छोटी सूक्तियाँ अपनी अर्थ–गाम्भीर्यता से ओत–प्रोत है। इन सूक्तियों के अर्थ को व्यावहारिक जीवन में छात्र अंगीकार करें तो उनमें नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास होगा। यथा – न ऋते श्रान्तस्य संख्याय देवाः। जो श्रम नहीं करते उसके साथ देवता भी मित्रता नहीं करते हैं। इस सूक्ति से छात्रों में श्रम के प्रति निष्ठा के भाव जागृत होंगे। इसी तरह संस्कृत की सभी सूक्तियाँ प्रेरणास्पद है।

05. संस्कृत भाषा के प्रति बच्चों में अभिरूचि कैसे सृजित करें ?

संस्कृत भाषा के प्रति बच्चों में रूचि जागृत करने के लिए निम्नांकित स्वाधिगम विधि अपना सकते हैं

(1) छात्रों को परिवेशीय भाषा से संस्कृत से जोड़ना।

(2) छात्रों को दैनिक जीवन में शिष्टाचारपरक शब्दों का ज्ञान।

(3) उनके स्वयं के बोलचाल में संस्कृत शब्दों का ज्ञान।

(4) दैनिक उपयोग की वस्तुओं में संस्कृत शब्दों का समावेश।

(5) घर में संस्कृत शब्दों का ज्ञान।

(6) विद्यालय परिवेश में संस्कृत का ज्ञान।

बच्चों के अभिरूचि सृजित करना

छात्रों के लिए संस्कृत एक नवीन भाषा के रूप में होती है। अतएव संस्कृत भाषा सीखने के प्रति छात्रों में रूचि उत्पन्न करना अत्यावश्यक है। छात्रों को उनके दैनिक जीवन में उपयोग में आने वाले बोल चाल की भाषा से संस्कृत की निकटता को बतलाते हुए अध्यापन करना चाहिए ताकि संस्कृत उसे नवीन भाषा नहीं प्रत्युत् उसकी पहचानी हुई भाषा लगे, इससे संस्कृत सीखने के प्रति उनमें रूचि उत्पन्न होगी।

उपर्युक्त विधियों को अपनाकर संस्कृत शिक्षक छात्रों में स्वाधिगम के माध्यम से संस्कृत सीखने के प्रति अभिरूचि उत्पन्न कर सकेगें।

परिवेशीय भाषा में संस्कृत

केंस – केशः,मुड़ी – मुण्डः, मुंह – मुखम्, दाँत – दन्तः, कपार – कपालम्, ओंठ – ओष्ठम्, सींग – शृंगम्, पीठ – पृष्ठम्

छात्रों के दैनिक जीवन में शिष्टाचार एवं अन्य संबोधन सूचक

अभिवादन सूचक – नमस्ते – नमस्ते, परणाम – प्रणाम,

बंदगी – वन्द (धातु से)। वन्दे

संबोधन – अरे! वो ! ओ, ए– हे!

आश्चर्य – अह्हा, !अहा! (अहो)

दुःखसूचक – हाय, !धिक्कार! धिक्,! हा! आह!

बोलचाल में संस्कृत

सबो – सर्वे, झन – जनाः, बिरथा – वृथा, तुमन – यूयम्, सत् – सत्यम्, कोस – क्रोशः, एति – इतः, बिख – विषम्, दूरिहा – दूरम्, बन – वनम्, किरपा – कृपा, ऊपर उपरि, सपूत – सुपुत्रः।

दैनिक उपयोग की वस्तुओं में संस्कृत

दतवन – दन्तधावनम्, खटिया – खट्वा, पलंग – पर्यंकम्, छुरी – छुरिका, लहसुन – लशुनम्, मसूर – मसूरः, जीरा – जीरकः, तेल – तैलम्, साग – शाकम्, आलू – आलुकम्, करू – कटुः, मीठ – मिष्टः, भात – भक्तम्, रिश्ता–संबंधी, मितान – मित्रम्, भाई – भ्राता, माई – माता, ससुर – श्वसुरः, ननंद – ननान्दः, सास – श्वश्रुः, सारा – श्यालः।

विद्यालय परिवेश में संस्कृत

पुस्तक – पुस्तकम्, कलम – कलमः, शिक्षक – शिक्षकः, पाठशाला – पाठशाला, कमरा – कक्षः, सहपाठि – सहपाठी, विद्यार्थी – विद्यार्थी, कुर्सी – आसन्दिका,मेज– –काष्ठफलकम्, तख्ता – श्यामपटः, चॉक – सुधाखण्डः, डस्टर – मार्जनी, स्टूल – संवेशः।

इकाई–2

आधार पाठ्यवस्तु मनोरमा (संस्कृत कक्षा 8)

06. सरल संस्कृत में गद्य पठन – संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीनतम भाषा है। संस्कृत में अनेक गद्य विधाओं का सूत्रपात हुआ है, जिन्हें सरल संस्कृत के द्वारा और अधिक हृदयग्राही बनाया जा सकता है। सरल संस्कृत में गद्य का पठन निम्नानुसार किया जा सकता है –

(1) कथा साहित्य पठन –

(2) कहानी पठन –

(3) नाट्य पठन –

(4) चम्पूकाव्य पठन –

संस्कृत में गद्य पठन

साहित्य में अनेक विधाएँ होती है, जिन्हें गद्य के द्वारा जनमानस तक पहुँचाया जाता है। मनुष्य अपने हृदय की संकल्पना को व्यक्त करने के लिए गद्य का प्रयोग करता है। छात्रों को संस्कृत भाषा में लिखने व बोलने का अभ्यास गद्य के द्वारा कराना ज्यादा श्रेयस्कर है छोटे–छोटे संस्कृत कहानियों के द्वारा सरल संस्कृत में गद्य का पठन निश्चित ही बाल मस्तिष्क को विकसित करेगा।

उक्त विधाओं का पठन शुद्धतापूर्वक उच्चारण के साथ किस प्रकार किया जावे इसका अभ्यास छात्रों को पर्याप्त दिया जावे। शिक्षक द्वारा पहले पढ़ाये जाने वाले पाठ का आदर्श–वाचन स्पष्ट रूप से किया जावे, जिससे छात्र उच्चारण को अच्छी तरह समझ सकें। इसके बाद छात्रों को अनुकरण वाचन का अवसर प्रदान किया जावे। शिक्षक छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन किये जाने के समय उनके द्वारा कोई त्रुटि की जा रही हो, तो उसका निवारण करेंगे।

शुद्ध उच्चारण के साथ पठन के लिए यह आवश्यक है, कि पाठ में आये हुए संधि एवं सामासिक शब्दों को पृथक् से श्यामपट पर लिख देवें तथा उसका विच्छेद एवं विग्रह करके छात्रों को अभ्यास करायें। इससे छात्र कठिन शब्दों को स्पष्टता के साथ उच्चारण कर सकेंगे।

उदाहरणार्थ – एक गद्य की अन्विति प्रस्तुत है –

एको वृद्धव्याघ्रः स्नातः कुशहस्तः सरस्तीरे ब्रूते –''भोभोः पान्थाः ! इदं सुवर्णकङ्कणं गृह्यताम्। ततो लोभाकृष्टेन केनचित्पान्थेन अलोचितम् –भाग्येनैतत् सम्भवति। किंत्वस्मिन्नात्मसंदेहे प्रवृत्तिर्न विधेया। पथिकः ब्रूते–'कुत्र तव कंङ्कणम?'व्याघ्रो हस्तं प्रसार्य दर्शयति। पान्थोऽवदत्–'कथं मारात्मके त्वयि विश्वासः? व्याघ्र उवाच –'श्रुणु रे पान्थ! पूर्वमेव यौवनदशायामति दुर्वृतः आसम्। अनेकगोमानुषाणां वधान्मे पुत्राः मृताः दाराश्च। वंशहीनश्चाहम् ।ततः केनचिद् धार्मिकेणाहमादिष्टः–''दानधर्मादिकं चरतु भवान्।'' तदुपदेशादिदानीमहं स्नानशीलो दाता वृद्धो गलित नखदन्तो कथं न विश्वासभूमिः ?

उक्त गद्यांश का शिक्षक स्वयं आदर्शवाचन करेंगे तथा अन्विति में आये हुए सन्धेय एवं सामासिक शब्दों के विच्छेद व विग्रह श्यामपट पर लिखकर विद्यार्थियों को उसके उच्चारण अभ्यास करायेंगे। इससे विद्यार्थी अनुकरण वाचन के समय उन शब्दों का सही उच्चारण के साथ पठन करेंगे। गद्यांश में आये अन्य कठिन शब्दों के अर्थ भी छात्रों को समझायेंगे, ताकि गद्य का हिन्दी में अनुवाद करते समय विद्यार्थी सरलता का अनुभव करेंगे।

07. सरल संस्कृत में पद्य पठन – संस्कृत में श्लोक पठन की अपनी एक शैली होती है। जिसे श्लोक की प्रकृति के आधार पर पढ़ा जाता है। प्रकृति से तात्पर्य 'छन्द' के आधार पर उसकी रचना है। प्रत्येक छंद की रचना में भिन्नता पाई जाती है उसके आधार पर गेयता, आरोह– अवरोह, लय में अंतर आता है। लौकिक संस्कृत के श्लोक व वैदिक संस्कृत के ऋचाओं में भी अंतर होता है। श्लोक पठन में हाव–भाव का भी महत्व होता है। इन सभी बातों का ध्यान रखा जाता है। शिक्षक छात्रों को श्लोक वाचन का पर्याप्त वाचन कराएँ। सस्वर वाचन से वातावरण का स्वयमेव निर्माण होता है।

संस्कृत में पद्य (श्लोक) पठन

संस्कृत में श्लोक पठन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें –

1. शुद्धोचारण के साथ पठन।
2. लयात्मक रूप से पठन।
3. आरोह – अवरोह का ज्ञान।
4. संधेय और सामासिक शब्दों का ज्ञान एवं विच्छेद व विग्रह करने की क्षमता।
5. गेयता के भाव को बनाए रखना।
6. विषय – शिक्षक सटीक आदर्श वाचन।
7. हाव – भाव या भावभंगिमा।

उदाहरण –

1. **''रूपयौवनसंपन्ना विशालकुलसंभवाः।**
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः।।''

अन्वय – रूपयौवन–सम्पन्नेन विशाल–कुले सम्भवाः (उत्पन्नः) मानवाः विद्याहीना न शोभन्ते। निर्गन्धा (गन्धरहिता) किंशुकाः इव न शोभन्ते।

सौंदर्य तथा यौवन से युक्त बड़े कुल में उत्पन्न मनुष्य विद्याहीन होने से सुगंधरहित टेसू (पलाश) के पुष्पों के समान शोभा नहीं पाते हैं।

(2) " अर्थागमो नित्यमरोगिता च
प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च।
वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या
षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन!।।"

हे राजन् ! नित्य धन का लाभ, आरोग्य, प्रियतमा और मधुर भाषिणी स्त्री, आज्ञाकारी पुत्र और धन का लाभ कराने वाली विद्या, ये संसार के छः सुख है।

(3) " विद्या विवादाय धनं मदाय
शक्तिः परेषां परपीडनाय।
खलस्य साधोः विपरीतमेतद्
ज्ञानाय दानाय रक्षणाय च।।"

दुष्ट की विद्या विवाद के लिए, धन मद के लिए और शक्ति दूसरों को पीड़ा पहुँचाने के लिए होती है। ठीक इसके विपरीत सज्जनों की विद्या, ज्ञान, धन, दान तथा शक्ति दूसरों की रक्षा के लिए होती है।

आदि कविः बाल्मीकिः

एकदा बाल्मीकिः शिष्यैः सह स्नानं कर्तुं तमसा नदी तटमगच्छत्। सः तत्रापश्यत्। यद व्याधेन क्रौन्चपक्षिणं वधमकरोत्। क्रौन्ची दुःखी भूत्वा रूदन् आसीत्। क्रौन्ची दुखतः मुनिरपि अत्यन्तं दुःखितं जातम्। मुनिः क्रौच्याः आकुलितायां दशायां व्याधं प्रति कारूणिकः शब्दः निर्गच्छत् कथितच्च।

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः।
यद् क्रौंचमिधुनादेकमवधीः काममोहितम्।।

मुनेः मुखात् निःसृतशब्दाः छन्दोनिबद्धारासन्। तेन कारूणिकेन शब्देन दृश्यान्तरं मुनिना दुःखितापि जाता। तस्मिन्नेव समये ब्रहमा तत्र प्रादुरभवत्। एवं कथितञ्च यद् त्वदीयवाण्यां शारदा विराजति। अतएव इदं श्लोकं आधारीकृत्य (भगवान् राम चन्द्रस्य जीवन चरित्रं) रामायणं नामकं महाकाव्यं रचनां करोतु। अस्माद् कारणात् रामायाणं विश्वविख्यातं प्रथमं संस्कृतं काव्यस्य रूपं प्रथितम्। एवञ्च अनेन कारेण महर्षि बाल्मीकिः आदकविरूपेण प्रथितः।

1. **शिक्षक आदर्श वाचन करेंगे।**
2. **कथा के भाव को संक्षेप बतायें।**
3. **छात्र को अनुकरण वाचन का पर्याप्त समय प्रदान करे।**
4. **काठिन्य निवारण करें।**
5. **संधि एवं समास का शब्द विग्रह करें**
6. **भावों का अनुभव करायें।**

विषय शिक्षक उक्त आख्यायिका का शुद्ध वाचन करते हुए छात्रों को शुद्धोचारण के साथ पठन करने हेतु प्रेरित करेंगे।

08. लघुकथा आख्यायिका को सरल संस्कृत में कैसे अवबोध कराएँ

बालकः ध्रुवः

प्राचीन काले उत्तानपादःनाम राजा आसीत्। तस्य सुनीतिः सुरूचिः च द्वे पत्न्यौ स्तः। राज्ञी सुरूचिः राज्ञोऽतीव प्रियासीत्। सुरूचेः पुत्रस्य नाम उत्तमः सुनीतेः पुत्रस्य नाम ध्रुवः चासीत्।

एकस्मिन् दिने राजा सुरूचेः पुत्रमुत्तमम् स्वाङ्के आदय वार्तालापमकुर्वन्। तद् दृष्ट्वा सुनीतेः पुत्रध्रुवस्य मनसि पितुः अंङ्के आरोढुमभिलषत्। तामाभिलाषां विलोक्य सुरूचिः अवदत् – राजाङ्के सिंहासने च योग्यः नासि। यतः त्वं ममोदरे उत्पन्नं नाभवत्।

इत्थं विमातुः कटुवचनं श्रुत्वा बालकः ध्रुवः रुदन् स्वमातरं समीपमगच्छत्। तथा च विमातुः कटुव्यवहार–विषये असूचयत्। पुत्रमूखात् सर्ववृत्तांत श्रुत्वा सुनीतिः अकथयत् –पुत्र ! धैर्यं शान्तिं च धारय। नूनं तदङ्के उपविशतुमिच्छसि तर्हि श्रद्धापूर्वकं नारायणमाराधय।

इत्थं मातुः प्रेरणया बालकः ध्रुवः राजभवनं त्यक्त्वा वने गत्वा कठिनं तपं प्रारभत। बालकः ध्रुव मुखाद् निसृतम् –''ऊँ'' नमो भगवते वासुदेवाय'' इति शब्दं श्रुत्वा तथा ध्रुवस्य तपसा प्रसन्नो भूत्वा भगवान् विष्णुः स्वयमेव आगत्य वरमददात्। येन ध्रुवः स्वर्गलोके अचलं पदं प्राप्तवान्।

लघु कथा पठन

संस्कृत में कथा साहित्य का विपुल भंडार है इससे छात्रों में नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास सहजता के साथ किया जा सकता है। यह पढ़ने में रूचिकर एवं प्रेरणादायी होती है। विषय शिक्षक लघु कथा का पठन स्वयं कर छात्रों को शुद्धोचारण के साथ पठन हेतु प्रेरित करेंगे।

09. संस्कृत के प्रति बच्चों में अभिरूचि कैसे बढ़े इस हेतु मंगलाचरण/स्वस्तिवाचन कैसे कराये।

मंगलाचरण/स्वस्तिवाचन की अवधारणा

मंगल + आचरण – शब्द से सार्थक अर्थ का बोध होता है। किसी कार्य को निर्विघ्न् पूर्वक पूरा करने के लिये मंगलाचरण या स्वस्ति वाचन करने का विधान काव्य एवं शास्त्रों में प्रतिपादित है। मंगल आचरण अर्थात् किसी भी देवी देवता गुरू या आप्त पुरूषों को नमस्कार कर या आशीर्वाद हेतु प्रार्थना करना ही मंगलाचरण या स्वस्ति वाचन कहलाता है।

मंगलाचरण स्वरूप प्रायः दो रूपों में देखा गया है।

1. पद्य या श्लोक नमस्कारात्मक या आशीर्वादात्मक।
2. वेद मंत्रों में स्वस्ति, कल्याण, भद्र वाचक मंत्र का पाठ करना।

मंगलाचरणम्

1. वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ।।

2. मंगलं भगवान् विष्णुः मंगलं गरूडध्वजः ।
मंगलं पुण्डीककाक्षः मंगलायतनो हरिः ।।

स्वस्तिवाचनम्

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नो पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो वृहस्पतिर्दधातु।।

उपर्युक्त मंगलाचरण के दोनों श्लोकों में भगवान् गणेश एवं विष्णु को नमस्कार करके सभी कार्यों में सफलता की कामना की गई है। स्वस्ति वाचन पाठ में वेद मंत्रों के माध्यम से इन्द्र वृद्धश्रवा पूषा, अरिष्टनेमि, वृहस्पति आदि देवताओं से प्रार्थना की गई है कि आप सब हमारे कार्यों में (स्वस्ति) कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें।

वेद मंत्रों के पाठ में विशेष रूप से आरोह–अवरोह एवं उदात्त अनुदात्त तथा स्वरित चिन्हों के माध्यम से अंग संचालन पूर्वक सस्वर पाठ किया जाने का विधान है। इन मंत्रों का सही और शुद्धोचारण से नादब्रह्म से निकलने वाली ध्वनियाँ हमारे पर्यावरणीय वातावरण को पवित्र करती है। पवित्र वातावरण अद्यतन समय की आवश्यकता है।

इसलिये प्रत्येक कक्षा में शिक्षक अपने पाठ को पढ़ाने के पूर्व मंगलाचरण या स्वस्ति वाचन का पाठ स्वयं करे एवं समूह के रूप में छात्रों से कराएँ। इस प्रकार के गतिविधि से छात्रों में पवित्र विचारों का संचार होगा एवं कक्षा का वातावरण शांत होगा जिससे विषयवस्तु की संकल्पना को सुदृढ़ता मिलेगी और छात्र भी विषय मूल्यों का सहज रूप से अधिगम करेंगे।

अन्यान्य मंगलाचरणम्

सहनाववतु सहनौभुनक्तु सहवीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।।

सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुख भागभवेत्।।

10. मित्र माता व गुरू को सरल संस्कृत में पत्र कैसे लिखें।

सरल संस्कृत में पत्र लेखन –पत्र लेखन का महत्व प्राचीनकाल से है जब संचार साधनों का विकास नहीं हुआ था मौखिक संदेश देकर संदेश वाहक भेजा जाता था। पक्षियों के माध्यम से भी संदेश भेजने की प्रथा रही है। धीरे–धीरे संचार माध्यमों का विकास हुआ, डाक आदान–प्रदान की व्यवस्था हुई। आज के युग में तो सूचनातंत्र बहुत अधिक विकसित हुआ है संचार के नये–नये साधन है। इस युग में भी पत्र की महत्ता बनी हुई है। आज भी पारिवारिक रूप से माता–पिता, पुत्र मित्र आदि को पत्र लिखा जाता है। व्यावसायिक एवं शासकीय पत्र भी पर्याप्त रूप से लिखे जाते है। पत्र लिखने के कुछ आवश्यक निर्देशों का पालन करना पड़ता है। वे इस प्रकार हैं –

संस्कृत में पत्र लेखन

पत्र लेखन का अपना महत्व होता है इसकी विधा इस प्रकार है –

1. औपचारिक –
2. अनौपचारिक –

इसी के आधार पर निम्न प्रकार से पत्र लिखे जाते हैं –

1. पारिवारिक पत्र –
2. व्यावसायिक पत्र –
3. शासकीय पत्र –
4. प्रार्थना पत्र –

पत्र लेखन हेतु आवश्यक निर्देश

1. पत्र की भाषा स्पष्ट व सरल हो।
2. अनावश्यक विशेषण न हो।
3. पत्र लिखने के उद्देश्य स्पष्ट हो।
4. पत्र संक्षिप्त हो।
5. पत्र में यथा निर्दिष्ट स्थान पर संबोधन, पता आदि का उल्लेख हो।

कुछ पारिवारिक पत्र के उदाहरण के माध्यम से छात्रों को सरल संस्कृत में पत्र लेखन का अभ्यास कराया जा सकता है। इसके अन्तर्गत मित्र को पत्र, पिता को पत्र तथा माता को पत्र लिखने का संक्षिप्त उल्लेख किया जा रहा है –

01. मित्रं प्रति पत्रम्

देवेन्द्र नगरं, रायपुरतः
दिनांक : 30 सितंबर 2012 ईसवीयः

प्रिय मित्र दिनेश ! सप्रेम नमस्ते

अत्र कुशलं तत्रास्तु। भवत्पत्रं प्राप्य अति हर्षमनुभवामि। अत्र मम अध्ययनं सम्यक्

चलति। आगामि–दीपमालिकापर्वसमये अवकाशः भविष्यति। तस्मिन् समये अहं गृहं गमिष्यामि। अस्मिन् पर्वणि भवान् अपि मत्गृहे आगम्यताम्। अनेन मह्यमति हर्षो भविष्यति। शेषमन्यत् कुशलम्। पत्रोत्तरं प्रेषणीयम्।

भवत्मित्रम्
सुबोधकुमारः

02. मातरं प्रति पत्रम्

शास. पूर्व माध्यमिक शाला
दुर्गनगरम्
दिनांक : 30 सितंबर 2012

पूज्यामातृचरणयोः

सादरं प्रणमामि

अत्र अहं कुशलोऽस्मि। भवत्या प्रेषितं पत्रं मया परह्यः प्राप्तम्। पठित्वा प्रसन्नोजातः। मम अध्ययनं सुव्यस्थितं चलति। मे अर्द्धवार्षिकी परीक्षा समाप्तमभवत्। प्रश्नपत्रं नाति सरलं नाति कठिनमासीत्। अहं विजयादशम्यावकाशस्य समये गृहमागमिष्यामि। शेष–कुशलमस्ति।

आज्ञाकारीपुत्रः
रमेशः

प्रार्थनापत्रम्

प्रति,

प्रधानाचार्य :
शासकीय विद्यालय रायपुरनगरम्

विषय :– अवकाशाय प्रार्थनापत्रम्।

महोदय,

निवेदनम् अस्ति। यद् दिनाङ्क 01.10.2012 विद्यालयम् आगन्तुम् असमर्थोऽस्मि। मदीया माता रूग्णा अस्ति।

अतः एकदिवसस्यावकाशं स्वीकृत्य माम् अनुग्रहीष्यन्ति श्रीमन्तः।

भवच्छात्रः
रमेशकुमारः
अष्टम–कक्षास्थः

इकाई –3
व्याकरण का अर्थ

11. भाषा की शुद्धता हेतु संस्कृत भाषा में ध्वनि के स्वरूप को कैसे निर्धारित करें–

1.व्याकरणिक विधाएँ –किसी वस्तु को टुकड़ों में विभाजित कर उसका वास्तविक स्वरूप दिखाना। यह शब्द भाषा के संबंध में ही अधिकांशतः प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक भाषा वाक्यों का समूह है तथा वाक्य ही भाषा का आधार है। वाक्य शब्दों का समूह है। प्रत्येक शब्द में कई वर्ण होते हैं, जिन्हें अक्षर भी कहा जाता है। अक्षर का शाब्दिक अर्थ है, अविनाशी जो कभी नष्ट नहीं होता है। यदि किसी शब्द का उच्चारण करें, तो उसके अक्षर उच्चारण काल में नाद कहलातें हैं। नाद (Sound) अविनाशी हैं। उस समय शब्द नादों का समूह होगा। सृष्टि में इन नादों का अनन्त भण्डार है। तंतर भाषा की शुद्धता हेतु संस्कृत भाषा में ध्वनि स्वरूप को समझना आवश्यक है। संस्कृत भाषा में निम्न अक्षरों का प्रयोग होता है–

अ,इ,उ,ऋ,लृ	– ह्रस्व
आ,ई,ऊ,ॠ	– दीर्घ
ए,ओ,ऐ,औ	– मिश्र विकृत दीर्घ

वर्णों का स्थान इस प्रकार होता है !

क,ख,ग,घ,ङ.	– क वर्ग	– कण्ठ
च छ ज झ ञ	– च वर्ग	– तालु
ट ठ ड ढ ण	– ट वर्ग	– मूर्धा
त थ द ध न	– त वर्ग	– दन्त्य
प फ ब भ म	– प वर्ग	– ओष्ठ

ञ, म ङ ण न इनके उच्चारण में नासिका की सहायता की भी आवश्यकता होती है।

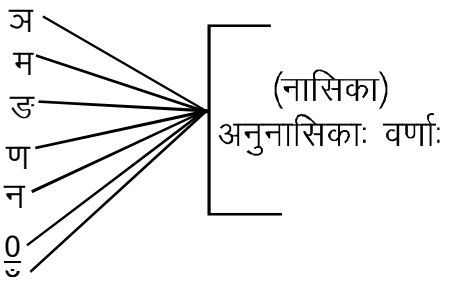

एक ही स्थान से निकलने वाले वर्ण सवर्ण कहलाते हैं। भिन्न स्थानों से उच्चारण किये गए वर्ण परस्पर असवर्ण कहलाते हैं।

य व र ल	– अन्तस्थ वर्णः
श ष स ह	– उष्म वर्णः
0	– अनुस्वारः
ँ	– अनुनासिकः
:	– विसर्गः

उच्चारण को शुद्ध एवं प्रभावी बनाने के लिये स्वाधिगम के अन्तर्गत निम्नांकित गतिविधियाँ हो सकती हैं इससे छात्र स्वयं सीखने में प्रोत्साहित होंगे।

गतिविधि – कक्षा के छात्रों को समूह में बाँट कर अलग–अलग उच्चारण स्थानों से उच्चरित होने वाले अक्षर या वर्ण को शुद्ध उच्चारण करने का अभ्यास इस प्रकार कराया जा सकता है। प्रथम समूह के छात्रों को तालव्य वर्ण का उच्चारण करने का अभ्यास कराया जावे । द्वितीय समूह के छात्रों को कण्ठ वर्ण का उच्चारण तथा तृतीय व चतुर्थ समूह को दन्त्य, मूर्धन्य तथा ओष्ठ एवं नासिका से उच्चरित वर्णों का अभ्यास दिया जावे। जब एक समूह अपनी प्रस्तुति कर रहा हो अन्य समूह के छात्र उसे मनोयोग पूर्वक श्रवण करेंगे यदि उसमें कोई त्रुटि हो तो उसे अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिख लेंगे प्रस्तुति के पश्चात् त्रुटियों पर ध्यान आकर्षित करेंगे। समूह के छात्र यदि उस त्रुटि का निवारण करते हों तो उचित है अन्यथा अन्य समूह के छात्र भी उसका निवारण कर सकेंगे। जब तक सभी समूह के छात्र प्रस्तुति न कर लें। तब तक यही क्रम जारी रखा जावे। इससे छात्रों में शुद्ध उच्चारण क्षमता का विकास होगा छात्र वर्णों के उच्चारण स्थान को जान सकेंगे विशेषकर श ष स के उच्चारण को अच्छी तरह समझ सकेंगे।

1.2. 12.संस्कृत के संधि व समास युक्त शब्दों को सरल कर कैसे बोध कराएँ।

संधि

दो शब्द जब पास–पास होते हैं तो एक दूसरे की निकटता के कारण पहले शब्द के अंतिम वर्ण में तथा दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण में अथवा दोनों में कुछ परिवर्तन अथवा विकार हो जाता है अर्थात् एक ही वाग्धारा में उच्चरित दो समीपस्थ ध्वनियों के परस्पर प्रभाव या विकार को संधि कहते हैं। जैसे – विद्यालयः। विद्या + आलयः इसमें विद्या की अंतिम ध्वनि आ और आलय की आदि ध्वनि आ का उच्चारण यदि एक ही वाग्धारा में किया जावे तो दोनों ध्वनियाँ प्रभावित या विकृत होकर मात्र आ रह जाती हैं , अतः यहाँ संधि है।

संधि के प्रकार
1. **स्वर संधिः**
2. **व्यञजन संधिः**
3. **विसर्ग संधिः**

संहितैकपदे नित्यानित्या धातूपसर्गयोः
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते ।।

एक पद के भिन्न– भिन्न अवयवों में धातु और उपसर्ग में समास में संधि अवश्य करना चाहिये, वाक्य के अलग–अलग शब्दों के बीच में संधि करना या न करना वक्ता की इच्छा पर निर्भर है।

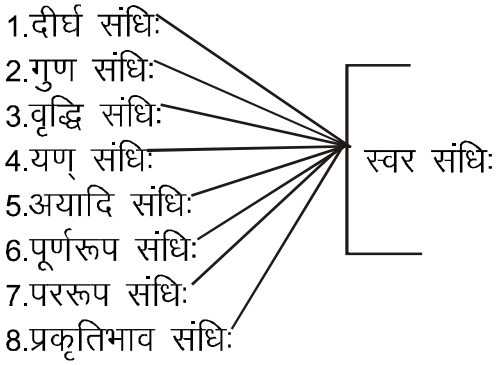

गतिविधि :– 1. छात्र समूहों में बँटकर स्वर संधि के उदाहरणों का वाक्यों में व्यावहारिक प्रयोग करेंगे। इसके अन्तर्गत स्वर संधि के प्रकार को आधार मानकर प्रत्येक समूह केवल अपने समूह से संबंधित स्वर संधि के एक प्रकार का वाक्यों में व्यावहारिक प्रयोग प्रस्तुत कर सकेंगे। प्रत्येक समूह के छात्र श्यामपट पर स्वयं करेंगे। यह प्रक्रिया सभी समूहों के लिये लागू होगी।

उदाहरण के लिये – प्रथम समूह को दीर्घ स्वर संधि को वाक्य में व्यावहारिक प्रयोग करने का कार्य मिला हो तो इस प्रकार स्वर संधि के प्रकार को व्यावहारिक प्रयोग करेंगे।

1. सः विद्यालयं गच्छति।
2. मम नाम रामावतारः अस्ति।
3. सः गिरीशः अस्ति।

इन वाक्यों में प्रयुक्त संधि युक्त शब्दों को रेखांकित कर उसका विच्छेद करेंगे।

जैसे – विद्यालयः = विद्या + आलयः

यहाँ पर आ + आ = आ हुआ है इसे स्पष्ट करेगा।

2. छात्र समूह में बँटकर संधि के विभिन्न नियमों के आधार पर संधि को प्रस्तुत करेंगे।

यथा – प्रथम समूह व्यञ्जन संधि के नियम – षकार और ट वर्ग के बाद सकार तथा त वर्ग आने पर षकार त वर्ग के स्थान पर षकार ट वर्ग होता है।

उदाहरण – एतत् + टीका = एतट्टीका यहाँ पर त् पश्चात् ट आने पर त् का ट हो गया है। इसी प्रकार अन्य उदाहरण बालस् + षष्ठः = बालष्षष्ठः यहाँ पर सकार के बाद षकार आने पर स् का ष हो गया है। छात्र संधि के अन्य नियमों का भी समूहवार उदाहरण सहित श्यामपट में प्रस्तुत करेंगे।

3. छात्र समूह में बंट कर विसर्ग संधि के विभिन्न नियमों के आधार पर विसर्ग संधि को प्रस्तुत करेंगे।

उदाहरण – पुरतः + अगच्छन् पुरत अगच्छन् यहाँ पर विसर्ग के पूर्व अ (त) और बाद में अ स्वर होने के कारण विसर्ग का लोप हो गया है।

इसी प्रकार अन्य उदाहरणों को छात्र समूहवार श्यामपट पर प्रस्तुति करेंगे।

समास

जब दो या दो से अधिक पद एक साथ जोड़ दिये जाते हैं इस साथ में जोड़ने की प्रक्रिया को ही ''समास'' कहते हैं। समास शब्द सम् (भली प्रकार) उपसर्ग लगाकर अस् धातु से बना है इसका अर्थ है, दो या अधिक पदों को इस प्रकार साथ रख देना कि उनके आकार में कमी भी हो जावे और अर्थ भी स्पष्ट हो जावे जैसे –

सभायाः पतिः – सभापतिः (षष्ठी तत्पुरूष) इसमें षष्ठी विभक्ति का लोप होने से सभापति हो गया। किसी समस्त शब्द को तोड़ कर उसका पूर्वकाल का रूप दे देना विग्रह कहलाता है। विग्रह का अर्थ टुकड़े–टुकड़े करना है। इसलिये वह विग्रह है।

उदाहरणार्थ –धनवार्ता का विग्रह हुआ धनस्यवार्ता।

समास के मुख्य चार भेद हैं।

1. अव्ययी भाव समासः
2. तत्पुरूष समासः
3. द्वन्द्व समासः
4. बहुब्रीहि समासः

1. अव्ययी भाव समासः –

यथाशक्ति – शक्तिमनति क्रम्य इति
उपगंगम् – गगायाः समीपम्
प्रत्यहम् – अहः अहः
अन्तर्गिरिः – गिरिषु इति

2. तत्पुरूष समासः – द्वितीया तत्पुरूष

द्वितीया तत्पुरूष – कृष्णं आश्रितः – कृष्णाश्रितः
द्वितीया तत्पुरूष – दुःखम् अतीतः – दुःखातीतः
तृतीया तत्पुरूष – अग्निपतितः – अग्निना पतितः
तृतीया तत्पुरूष – हरिणा त्रातः – हरित्रातः
चतुर्थी तत्पुरूष – यूपाय दारू – यूपदारू
पंचमी तत्पुरूष – चौराद्भयम – चौरभयम्
षष्ठी तत्पुरूष – राज्ञः पुरुषः – राजपुरुषः
सप्तमी तत्पुरूष – प्रेम्णिधूर्तः – प्रेमधूर्तः
सप्तमी तत्पुरूष – सभायां पण्डितः – सभापण्डितः

टीप – तत्पुरूष समास के अंतर्गत दो समास आते हैं–
1. द्विगु 2. कर्मधारय

3. द्वन्द्व समासः

रामश्च लक्ष्मणश्च – रामलक्ष्मणौ
रामश्च कृष्णश्च – रामकृष्णौ
माता च पिता च – पितरौ

4. बहुब्रीही समासः

पीतम् अबरम् यस्य सः – पीताम्बरम्
धनुः पाणौ यस्य सः – धनुष्पाणिः
चन्द्रः शेखरे यस्य सः – चन्द्रशेखरः

छोटे समूह में विभाजित होकर समास के विभिन्न नियमों के अनुरूप समास विग्रह करेंगे। छात्र समास के उपर्युक्त उदाहरणों के अतिरिक्त अन्य उदाहरणों का संकलन कर नियमों को जान सकेंगे। प्रथम समूह अव्ययी भाव समास, द्वितीय समूह तत्पुरूष समास, तृतीय समूह द्वन्द्व समास तथा चतुर्थ समूह बहुब्रीही समास के नियमों को सोदाहरण प्रदर्शन कर सकेंगे।

14. बच्चों को संस्कृत कारकों का बोध कराते हुए वाक्य प्रयोग की अवधारणा को कैसे पुष्ट करें।

''क्रियाजनकत्वं कारकम्'' संस्कृत में वाक्य संरचना के लिए कारकों का ज्ञान होना अत्यावश्यक है। इसके अभाव में हम संस्कृत में शुद्ध वाक्य रचना नहीं कर सकते, अतएव संस्कृत के छात्रों को

संस्कृत कारक का ज्ञान कराना आवश्यक है। यदि छात्र कारक एवं विभक्ति का सही प्रयोग करना सीख जाता है तो उन्हें संस्कृत वाक्य संरचना में सरलता होगी।

प्रश्न यह उपस्थित होता है कि छात्रों को व्यावहारिक एवं गतिविधि आधारित कारक एवं विभक्ति का ज्ञान करायें, तो छात्रों का ज्ञान पुष्ट होगा। संस्कृत में कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण यह छः कारक माने गये है। संबंध को कारक की श्रेणी में नहीं गिना जाता है किन्तु षष्ठी विभक्ति के प्रयोग में संबंध का उपयोग होता है।

कारकों के आधार पर वाक्य प्रयोग की अवधारणा

क्रिया के संम्पादन में जिन शब्दों का उपयोग होता है, उन्हें कारक कहते हैं।

क्रिया का सम्पादक	–	कर्ता
क्रिया का कर्म	–	कर्म
क्रिया का संपादन (जिसके द्वारा हो)	–	करण
क्रिया जिसके लिए हो	–	सम्प्रदान
क्रिया जिससे दूर हो	–	अपादान
क्रिया जिस स्थान पर हो	–	अधिकरण

इस प्रकार छः कारक माने गये हैं।

उदाहरण –''राम के लड़के, मोहन को, श्याम ने पीटा''। इस वाक्य में पीटने की क्रिया से सीधा संबंध मोहन और श्याम से है, राम का कुछ भी संबंध मोहन और श्याम से नहीं है, अतएव ''राम के'' को कारक नहीं कहा जा सकता है। राम का संबंध मोहन से है, किन्तु पीटने की क्रिया के सम्पादन में राम का कोई संबंध नहीं है।

गतिविधि –अयोध्या के राजा दशरथ ने राजकोष से गंगा नदी के किनारे अपने हाथ से ब्राह्णों के लिए धन दिया। (अयोध्यायाः राजादशरथः राजकोषात् धनं गंगातटे स्वहस्तेन विप्राय प्रयच्छत्)।

उपरोक्त उदाहरण में –

प्रथमा	एकवचन	दशरथः
द्वितीया	एकवचन	धनम्
तृतीया	एकवचन	स्वहस्तेन
चतुर्थी	एकवचन	विप्राय
पञ्चमी	एकवचन	राजकोषात्
सप्तमी	एकवचन	गंगातटे

''राजा दशरथ'' कर्ता का संबंध 'अयोध्या के' इस पद का क्रिया से कोई संबंध नहीं है। इसलिए यहाँ षष्ठी विभक्ति, कारक नहीं है। इसी उदाहरण को दूसरी गतिविधि के माध्यम से भी छात्रों को समझाया जा सकता है। तथा सीखने का मूल्यांकन भी किया जा सकता है।

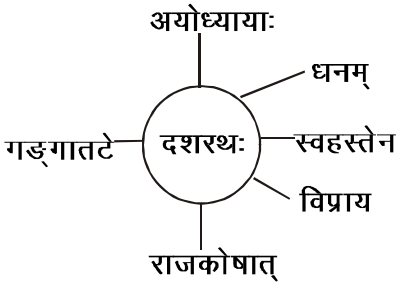

इस उदाहरण में छात्रों को समझाने के लिए गतिविधि बताई गई है, इसमें क्रिया की पूर्ति छात्र स्वयं करेंगे। इसके लिए छात्रों को छोटे–छोटे प्रश्न दिए जायेंगे और इस उदाहरण को छात्र स्वयं समझेंगे।

प्रश्नाः

1. दशरथः किं ददाति ?
2. केन ददाति ?
3. कस्मै ददाति ?
4. कस्मात् ददाति ?
5. कुत्र ददाति ?

इस तरह के प्रश्नों से छात्रों को कारक का ज्ञान सरलता पूर्वक हो सकता है।

15. क्रिया, पुरूष, काल व लिंग का प्रयोग

क्रिया

संस्कृत में क्रियाओं का ज्ञान छात्रों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसके ज्ञान के अभाव में छात्र संस्कृत अनुवाद करने में समर्थ नहीं हो सकते। संस्कृत में क्रिया, धातुरूप में व्यवहृत होता है । ये धातु रूप गणों के रूप में दशगणों में विभक्त है। जो इस प्रकार हैं –

भ्वादि,अदादि, जुहोत्यादि, दिवादि, स्वादि, तुदादि, तनादि, क्रयादि, रूधादि एवं चुरादि गण श्लोक के रूप में इस प्रकार भी लिखा जा सकता है –

संस्कृत भाषा के प्रायः सभी शब्द, धातुओं से बनते हैं। संज्ञा, विशेषण, क्रिया, अव्यय इत्यादि सभी धातुओं से बनते हैं। धातु पाठ में कुल 18 से 80 धातुओं की गणना हैं। इन्हीं में प्रत्यय विशेष जोड़ कर संस्कृत भाषा के शब्द बने हैं। धातुओं में कृदन्त प्रत्यय जोड़कर संज्ञा, विशेषणादि बनते हैं। धातुओं से तिङ् प्रत्यय जोड़कर क्रियाएँ बनाई जाती है।

''भ्वाद्यादी, जुहोत्यादि, दिवादिः स्वादिरेव च।
तुदादिश्च रूधादिश्च, तनादि क्रिचुरादयः।।

कुछ धातुएँ सकर्मक व कुछ अकर्मक होती हैं। क्रिया बनाने के लिए धातुओं के रूप तीन वाच्यों में होते हैं। सकर्मक धातुओं की क्रियाओं के साथ कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य संभव होते हैं तथा अकर्मक धातुओं के साथ कर्तृवाच्य और भाववाच्य संभव होते हैं।

क्रियाओं के प्रयोग के संदर्भ में कुछ गतिविधियाँ इस प्रकार हो सकती है –

गतिविधि – संस्कृत में कुछ वाक्य लिखकर उन वाक्यों मे प्रयुक्त क्रियाओं को पहचानने के लिए छात्रों से कहा जा सकता है। यथा –

1. मोहनः धावति।
2. युवां क्रीडथः।
3. सः जलं पास्यति।
4. अहं पाठशालां गच्छामि।
5. सोहनःपुस्तकम् अपठत्।

6. सीता वनं गच्छति।
7. यूयं क्षेत्रं प्रति गच्छत।
8. पिता पुत्रेण सह अगच्छत्।
9. त्वं फलं खादसि।
10. त्वं पुस्तकं पठेः।

उपर्युक्त वाक्यों में जिन–जिन क्रियाओं का प्रयोग हुआ है उन्हें विद्यार्थियों को पृथक् से लिखने के लिए शिक्षक निर्देश करेंगे। साथ ही उन क्रियाओं के लकार एवं वचन का ज्ञान भी हो सकेगा। इसी प्रकार अन्य कोई गतिविधि शिक्षक छात्रों से करा सकते हैं, जिससे छात्रों में क्रिया ज्ञान की समझ विकसित हो सके।

पुरूष

संस्कृत में शुद्धानुवाद करने के लिए कर्ता के पुरूष का ज्ञान आवश्यक है। यदि छात्र को पुरूष का सही ज्ञान नहीं होगा तो वह वाक्य के कर्ता के साथ सही लकार का प्रयोग नहीं कर सकेगा। अतएव पुरूष का ज्ञान छात्रों के लिए नितान्त आवश्यक है। इसे सरल रूप से पहचानने का तरीका यह है कि यदि वाक्य में अस्मद् शब्द का रूप अहम् आवां वयम् से लेकर मयि आवयोः अस्मासु का प्रयोग हुआ हो तो वाक्य का कर्ता उत्तम पुरूष में होगा। उसी प्रकार यदि वाक्य में युष्मद् शब्द का प्रयोग त्वं युवां यूयम् से त्वयि युवयोः युस्मासु व्यवहृत हुआ हो, तो वाक्य का कर्ता मध्यम् पुरूष का होगा। इन दोनों के अतिरिक्त वाक्य में जो भी प्रयोग होगा वह अन्य पुरूष के अन्तर्गत आयेगा। छात्रों को विभिन्न पुरूषों से संबंधित वाक्य देकर उसमें वाक्य के कर्ता में पुरूष पहचानने के लिए शिक्षक निर्देशित करेंगे। जैसे –

पुरूष

संस्कृत में तीन पुरूष माने जाते हैं उत्तम पुरूष मध्यम पुरूष एवं अन्य पुरूष! स्वयं के लिए मैं –उत्तम पुरूष–अस्मद् शब्द रुप तुम–मध्यम पुरुष–युष्मद् शब्द रूप वह–अन्य पुरूष–सः

1. आवां पाठशालां गच्छावः।
2. यूयं पुस्तकं पठथ।
3. ताः क्रीडन्ति।
4. वयं फलानि खादामः।
5. अहं जलं पास्यामि।
6. तौ कन्दुकं क्रीडतः।
7. सः गृहं गच्छेत्।
8. युवाम् ओदनम् अखादतम्।
9. त्वं कुत्र गच्छसि।
10. रमा विद्यालयं गच्छति।

उपर्युक्त वाक्यों में जिस–जिस पुरूष का प्रयोग हुआ है उसे अलग से पहचान कर छात्रों को लिखने के लिए कहें, इससे छात्रों में पुरूष का ज्ञान स्थायी रूप से हो सकेगा। इस तरह के प्रयोग शिक्षक कक्षा में बार–बार कराएँ तो निश्चय ही छात्र पुरूष ज्ञान को स्थायी रूप से आत्मसात् कर सकेंगे तथा उसे किसी भी वाक्य में कर्ता के पुरूष को पहचानने में कठिनाई नहीं होगी।

काल

आचार्य पाणिनि के व्याकरण में इन कालों का बोध कराने के लिए मिलते हैं तथा ये सब ल् से आरंभ होने के कारण इनको लकार कहते हैं। जो इस प्रकार है –

1. वर्तमान काल – लट्लकार
2. आज्ञार्थक काल – लोट्
3. विध्यर्थ काल – विधिलिङ्
4. अनद्यतन भूत – लङ्
5. परोक्ष भूत – लिट्
6. सामान्य भूत – लुङ्
7. अनद्यतन भविष्य – लुट्
8. सामान्य भविष्य – लृट्
9. आशीः – आशीर्लिङ्
10. क्रियादिपत्ति – लृङ्

काल

काल, समय के परिवर्तन को सूचित करता है। यह वर्तमान भूत एवं भविष्य की क्रियाओं को स्पष्ट करने में सहयोगी है। संस्कृत में मूलधातुओं से भिन्न–भिन्न काल तथा वृत्तियों के लिए अनेक रूप बनते है, उनको लकार कहते हैं। इन लकारों के आधार पर संस्कृत में 10 लकार (वृत्तियाँ) है।

यथा – 1. लट्लकार – वर्तमान काल की क्रिया का बोध कराने के लिए लट्लकार का प्रयोग करते हैं, जैसे – सः गच्छति , वयं कुर्मः आदि।

2. लोट्लकार (आज्ञार्थक) – आज्ञा देने का प्रयोग करने के लिए लोट्लकार का प्रयोग करते हैं।

जैसे – त्वं पाठशाला गच्छ, सः करोतु, अहं करवाणि आदि।

3. विधिलिङ्ग (विध्यर्थ) – विधिलिङ्ग का प्रयोग किन्हीं को नम्र आदेश (चाहिए अर्थ में) देने के लिए होता है, जैसे – सः कुर्यात्, तौ कुर्यातम्, ते कुर्युः।

4. लङ्लकार (अनद्यतन भूत) – ऐसा भूतकाल जो आज न हुआ हो अर्थात् इस काल के रूप में ऐसी दशा में प्रयोग मे ंलाये जाने चाहिए, जैसे – सः अद्य पठितुम् अगच्छत्। वह आज पढ़ने गया।

5. लिट् (परोक्षभूत) – जो अतीत काल में जो आँखों के सामने न हुआ, जैसे – सः पाठशाला जगाम। वह पाठशाला गया।

6. सामान्य भूत (लुङ्) – सामान्य भूत सब जगह में प्रयोग में लाया जा सकता है, चाहे क्रिया आज समाप्त हुई हो या बरसों पहले। क्रिया के अन्त में स्म शब्द जोड़कर वाक्य बनाया जाता है। जैसे – कश्चित् राजा प्रतिवसति स्म। (कोई राजा रहता था)। किन्तु लकारों में ''कश्चित् राजा आवात्सीत्'' होगा।

7.लुट् (अनद्यतन भविष्य) – भविष्यकाल की क्रिया का बोध कराने के लिए पहले का प्रयोग ऐसी दशा में नहीं हो सकता है, जब क्रिया आज हो। उदा. तौ गन्तारौ (वे दोनों आज जायेंगे)।

8. लृट् (सामान्य भविष्य) – क्रिया की होने का सब जगह प्रयोग हो सकता है। जैसे –

उदा. – रमा गमिष्यति। (रमा जायेगी)

9. आशीलिंङ् (आशीः) – इसका प्रयोग आशीर्वादात्मक होता है, जैसे – तुम सौ वर्ष तक जीओ– त्वं जीन्याःशरदां शतम्।

10. लृङ् (क्रियातिपत्ति) – जहाँ एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर हो, जैसे – यदि सः आगमिष्यति तर्हि अहं तेन स गमिष्यामि। (यदि वह आता है तो मैं भी उसके साथ जाऊँगा।)

इस प्रकार शिक्षक विभिन्न लकारों से संबंधित उदाहरणों से छात्रों को काल का समुचित ज्ञान करा सकते हैं।

लिङ्ग

संस्कृत में सारी संज्ञाओं को तीन लिङगों में विभक्त किया गया है–

1. पुँल्लिङ्ग
2. स्त्रीलिङ्ग
3. नपुंसकलिङ्ग

संस्कृत में लिङ्ग प्रकृति के अनुसार नहीं होता है जैसे – तनुः (स्त्रीलिङ्ग), देह (पुल्लिङ्ग), और शरीरम् (नपुंसकलिङ्ग), सभी शरीर का बोध कराने वाले हैं।

सारे अचेतन पदार्थवाचक शब्द नपुंसकलिङ्ग में, पुरूषवाची पुँल्लिङ्ग में और स्त्रीवाची स्त्रीलिङ्ग में हैं तो कहा जा सकता कि लिङ्ग प्रकृति के क्रम से है। किन्तु बात इसके विपरीत होने के कारण संस्कृत की संज्ञाओं का लिङ्ग जानना कठिन है, उसका ज्ञान कोशों से तथा काव्य ग्रन्थों के अध्ययन से ही जाना जा सकता है।

> हिन्दी भाषा में दो लिङ्ग होते हैं स्त्रीलिङ्ग पुँल्लिङ्ग जैसे –लड़की जाती है लड़का जाता है इत्यादि। संस्कृत में इन दो लिङ्गों के अतिरिक्त एक और लिङ्ग होता है, जिसे नुपंसक लिङ्ग कहते है।

विषय अध्यापक विभिन्न संज्ञा शब्दों को श्यामपट में लिखकर छात्रों को उनका लिङ्ग निर्धारण करने हेतु निर्देशित करें जिससे छात्रों में लिङ्गों का ज्ञान सुस्पष्ट हो सके –

उदाहरणार्थ – अवनि, भूमिः, ग्लानिः, कविः, अग्निः, भरणि, अरणि, विद्या, अजा, श्रीः, पाकः, त्यागः, गोचरः, गतम्, सख्यम्, चातुर्यम्।

इन शब्दों को क्रम से पुल्लिङग स्त्रीलिङ्ग व नपुंसकलिङ्ग में लिखने हेतु कहें। इसी प्रकार अन्यान्य शब्दों का उदाहरण देकर छात्रों को लिङ्ग ज्ञान का अभ्यास करावें।

15. सरल संस्कृत में वाच्य परिवर्तन कैसे कराएँ

वाच्यः

वाच्य किसे कहते हैं?

वाच्य का अर्थ है जिसको बताया जाय। अर्थात् क्रिया जिसे बताए, उदाहरण– रामः फलं खादति।

वाक्य कहने पर यदि हम प्रश्न करें कि कौन फल खाता है (कः फलं खादति) तो इसका उत्तर होगा – रामः

यहाँ क्रिया खादति का कर्ता राम है।

अतः यह क्रिया कर्तृ वाच्य में है

मया चित्रकूटः दृश्यते वाक्य में दृश्यते क्रिया का अर्थ है – दिखाई दे रहा है '' देखा जाता है''।

अब यदि पूछा जाये कः दृश्यते – कौन दिखाई दे रहा है। तो उत्तर होगा – चित्रकूटः

परन्तु यह सभी जानते हैं, कि देखने वाला है अहम् अर्थात मैं और जो देखा जा रहा है चित्रकूट अर्थात् कर्म इसलिए दृश्यते क्रिया कर्म को बता रही है। यह कर्म वाच्य है। ऐसा भी होता है वाक्य में जिनमें कोई भी नहीं होता

जैसे –

वह हँसी – सा अहसत्

वह सोता है – सः स्वपिति

इन क्रियाओं का जब वाच्य बदलता है तो ये क्रियाएँ सब लकारों में केवल प्रथम पुरूष के एकवचन में प्रयुक्त किए जाते है और ऐसी क्रियाओं को भाव वाच्य क्रियाएँ कहते हैं।

जैसे – कर्तृवाच्य	**भाववाच्य**
सः हसति	तेन हस्यते
सः स्वपिति	तेन सुप्यते
जनाः चलन्ति	जनैः चल्यते
अहं गच्छामि	मया गम्यते

संस्कृत में वाच्य 3 होते हैं – कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**	**भाव वाच्य**
1. कर्ता मुख्य होता है	1. कर्म मुख्य होता है।	1. कर्म होगा ही नहीं
2. क्रिया कर्ता के अनुसार चलती है	2. कर्म के अनुसार ही क्रिया का पुरूष,वचन,लिंङ्ग होगा।	2. कर्ता में तृतीया
3. कर्ता में प्रथमा और कर्म में द्वितीया	3. कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा क्रिया कर्म के अनुसार	3. क्रिया में प्रथम पुरूष का एकवचन होगा।
उदा. 1. सः हसति।	मया फलं खाद्यते	तेन हस्यते

वस्तुतः जिन क्रियाओं के कहने से क्या ? किसे ? किसको ? आदि से संबंधित कोई जिज्ञासा नहीं उठती, वे क्रियाएँ अकर्मक अर्थात् कर्महीन होती है। जैसे – अहं तिष्ठामि।

हमेशा ध्यान रखें कि कर्मवाच्य क्रिया का कर्ता तृतीया, कर्म में प्रथमा विभक्ति प्रयुक्त होता है। क्रिया का संबंध कर्ता से हटकर कर्म में साथ जुड़ जाता है। जैसे –

1. मोहन फलं खादति – मोहनेन फलं खाद्यते
2. अहं फलं खादामि – मया फलं खाद्यते
3. त्वं फलं खादसि – त्वया फलं खाद्यते

1. तेन फलं खाद्यते
2. तेन फले खाद्येते
3. तेन फलानि खाद्यन्ते

आपने कर्मवाच्य और भाववाच्य क्रियाओं को देखा। बताइये ये कौन से पद में है। ये सभी

क्रियाएँ आत्मने पद में है। कर्मवाच्य और भाववाच्य की सभी क्रियाएँ आत्मने पद में ही प्रयुक्त की जाती है। प्रायः इन सभी धातुओं में ''य'' जोड़ा जाता है।

लभते – लभ्यते
पिबति – पीयते
पश्यति – दृश्यते
तिष्ठति – स्थीयते

गतिविधिः– वाच्यः कः? क्रियां बोधयति तत् वाच्यः।

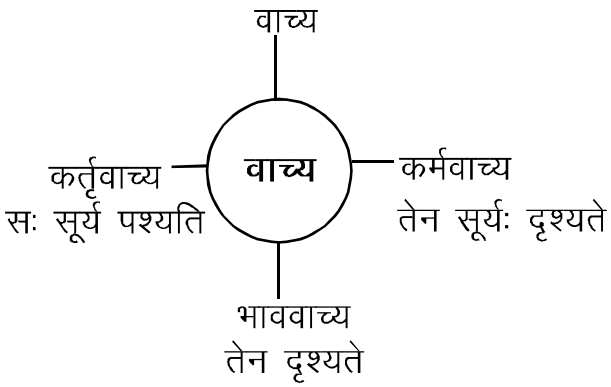

16. गद्य एवं पद्य शिक्षण में आए अव्यय एवं उपसर्गों का बोध

भूमिका –

संस्कृत भाषा में गद्य एवं पद्य शिक्षण के अनेक विधियाँ हैं। यथा – स्वरोच्चारण, व्याख्या, कहानी कथन, ध्वनि साम्य, अनुकरण, अनुवाद, शब्दपूर्ति, समवाय, चित्र वर्णन, सुनो और बोलो एवं अभ्यास विधि आदि। सभी विधियों की अध्यापन शैली अलग–अलग है।

संस्कृत गद्य पद्य शिक्षण में सर्वप्रथम शिक्षक आदर्श (सस्वर) वाचन करता है पश्चात् विद्यार्थी अनुकरण वाचन करते हैं। ताकि छात्रों की कमियों का पता लग सके एवं पाठांश में आए कठिनाइयों को दूर कर सकें। विशेष कर काव्य शिक्षण में छात्रों को आरोह अवरोह आदि का ज्ञान आवश्यक होता है जिससे विद्यार्थी सस्वर वाचन करते हैं तथा श्लोकों के भाव को समझते हैं।

उद्देश्य :–

1. शुद्धोचारण के साथ पढ़ना सिखाना।
2. आरोह–अवरोह के साथ गद्य–पद्य के वाचन क्षमता का विकास।
3. भावार्थ समझने की क्षमता विकसित करना
4. व्याकरणिक ज्ञान का विकास।
5. शब्द भण्डार में वृद्धि।
6. आज के परिवेश के साथ संबंधित पाठांश को जोड़ना।
7. काव्य सौन्दर्य की अनुभूति कराना।
8. कल्पना एवं तर्क शक्ति का विकास।

9. संस्कृत भाषा के प्रति रूचि जागृत करना।

10. संस्कृत भाषा के माध्यम से राष्ट्रीय एवं नैतिक मूल्यों का विकास करना।

गद्यांश

इदम् अस्माकं रायपुरनगरं खारूननद्याः तटे स्थितम्। अस्य नगरस्य महत्वं प्राचीन कालादेववर्तते। इयं नगरी तडागानां नगरी इति कथ्यते। अत्र अष्टादशाधिकाः तडागाः सन्ति। इयम् नगरी छत्तीसगढ़ क्षेत्रस्य संस्कारधानी इति अभिधीयते।

अत्र विवेकानन्द सरोवरः अस्ति। सरोवर समीपे एकम् उद्यानम् अस्ति। उद्याने विविध वृक्ष लताः जनानां मनांसि रञ्जयन्ति।

श्लोकाः

1. **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते**
   रमन्ते तत्र देवताः।
   यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते
   सर्वास्तत्राफलाक्रियाः ।।
2. **विहाय कामान्यः सर्वान्युमां श्चरति निःस्पृहः।**
   निर्गमो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति।।
3. **पत्रं पुष्पं फलं तोयं, यो मे भक्त्या प्रयच्छति।**
   तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।।

उदाहरण में दिए गए गद्यांश का छात्र आरोह– अवरोह का ध्यान रखते हुए तथा ध्वनि का उपयुक्त उच्चारण करते हुए शुद्ध उच्चारण के साथ वाचन कर सके जिससे उनमें गद्य पठन क्षमता का विकास हो सके।

इसी तरह उदारणार्थ दिए गए श्लोक का सस्वर वाचन करते हुए, आरोह–अवरोह का उचित ध्यान रखते हुए श्लोक का वाचन करेंगे इससे छात्रों में श्लोक वाचन क्षमता का विकास होगा। त्रुटि रहित पठन कौशल की क्षमता छात्रों में विकसित होगी। वे श्लोकों का सस्वर एवं आनंददायी पूर्ण पठन करने में समर्थ हो सकेंगे।

इस प्रकार छात्रों को गद्य एवं पद्य पठन का निरंतर अभ्यास कक्षा शिक्षण में विषय शिक्षक द्वारा कराया जावें।

गद्य एवं पद्य में आए हुए उपसर्ग एवं अव्यय से संबंधित शब्दों का प्रयोग उन्हें कराया जावे ताकि छात्र उपसर्ग एवं अव्यय से परिचित हो सके।

उपसर्ग से संबंधित गतिविधि

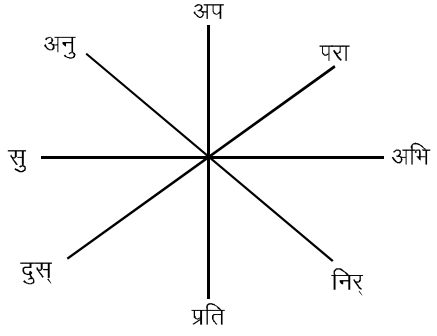

धातु या धातु से बने हुए विशेषण जो संज्ञा आदि शब्दों के पूर्व जोड़े जाते हैं, उनको उपसर्ग कहते है।

उपर्युक्त उपसर्गों को आधार मानकर दो–दो सार्थक शब्द बनाने हेतु छात्रों को शिक्षक निर्देशित करेंगे। इसके उदाहरणार्थ शिक्षक स्वयं किसी एक या दो उपसर्ग से शब्द बनाकर छात्रों को समझाये जिससे छात्र समझकर शब्द निर्माण कर सकेंगे यथा :–

वि – विचलः, वियोगः

निस् – निस्सार, निःशुल्क

छात्रों को इस तरह का अभ्यास निरन्तर कराने से उनमें उपसर्ग का ज्ञान पुष्ट होगा। छात्रों को उपसर्ग से संबंधित इस श्लोक को कण्ठस्थ करने हेतु भी शिक्षक प्रेरित करेंगे।

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते ।
प्रहाराहार संहार विहार परिहारवत् ।।

अव्ययम्

अव्यय ऐसे शब्द को कहते हैं जिसके रूप में कोई विकार न उत्पन्न हो। सदा एक सा रहे। जो लिङ्ग, विभक्ति, वचन के अनुसार घटे–बढ़े नहीं अर्थात् उसमें कोई परिवर्तन न हो, वही अव्यय है। ''न व्ययति इति अव्ययम्''

अव्यय के प्रकार – अव्यय चार प्रकार के होते हैं –

1. उपसर्ग 2. क्रियाविशेषण 3. समुच्चय बोधक शब्द 4. मनोविकार सूचक शब्द। इनके अतिरिक्त प्रकीर्णक

1. उपसर्ग संबंधी शब्द – अपिधानम्, अनुगमनम् आदि
2. क्रियाविशेषण – अकस्मात्, अग्रतः, अलम्, कच्चित् आदि
3. समुच्चय बोधक – च, अथच, तु आदि।
4. मनोविकार सूचक – इनका वाक्य से कोई संबंध नहीं होता।

उदाहरण **किम् धिक्, अयि, अरे, हा, हन्त आदि**
प्रकीर्णक – अधुना, तर्हि, सद्यः आदि।

शिक्षक कक्षा शिक्षण में गद्य या पद्य अध्ययन कराते समय छात्रों को उसमें आये हुए अव्यय शब्दों को पहचान करने हेतु निर्देशित करेंगे, जिससे छात्रों को अव्यय शब्दों का ज्ञान स्पष्ट हो सके, ताकि कक्षा शिक्षण आनंददायी हो सके।

17. सरल संस्कृत में कृदन्तों का व्यावहारिक प्रयोग कैसे कराएँ

कृदन्त विचार

धातुओं के अन्त में लगाकर जो प्रत्यय संज्ञा, विशेषण और अव्यय के वाचक शब्दों को बनाते हैं वे प्रत्यय कृत प्रत्यय कहे जाते हैं और उनके योग से बने शब्द को कृदन्त कहते हैं। जैसे उदारणार्थ 'कृ' धातु से 'तृच्' प्रत्यय जोड़कर 'कर्तृ' शब्द बनता है। यहाँ तृच् कृत् प्रत्यय है एवं कर्तृ कृदन्त है।

संज्ञा होने के कारण इसके रूप अन्य संज्ञाओं के तुल्य विभक्तियों में यह चलते हैं।

कर्तृ वाच्य में कृदन्त शब्द कर्ता के विशेषण होते हैं तथा कर्म वाच्य मे कर्म के विशेषण और

भावमय में नपुंसकलिङ्ग में एकवचनान्त प्रयुक्त होते हैं। जो कृदन्त अव्यय होते हैं वे एक रूप रहते हैं। उदाहरणार्थ क्त्वा लगाकर गत्वा बनने पर यह सदा एक रूप रहेगा।

कभी–कभी कोई कृदन्त भी क्रिया का काम देते हैं। यथा–सः गतः (वह गया) में गतः शब्द। यथार्थ रूप में क्रिया विशेषण है। इस वाक्य में क्रिया छिपी हुई हैं। कृत् प्रत्ययों के मुख्य तीन भेद है।

कृत् प्रत्ययाःसप्त

तव्यत्, तव्य, अनीयर, केलिमर, यत्, क्यप्, ण्यत्

उपर्युक्त प्रत्यय सदा भाववाच्य और कर्मवाच्य में ही प्रयुक्त होते हैं। कर्तृवाच्य में नहीं हैं।

1.वर्तमान कालिक कृदन्त

शतृ – शानच् प्रत्यय

परस्मै पद –

शतृ प्रत्यय
(अ)बालकः कार्यं कुर्वन् हसति

↓

(ब) बालिका हसन्ती गच्छति

आत्मनेपद –

शानच् प्रत्यय
(पु.) छात्रः गुरूं सेवमानः मोदते।
(स्त्री) बालिका विद्यालये मोदमाना पठ्यते।

2. भूतकालिक कृदन्त – (त) (क्तवतु) प्रत्यय भूतकाल को प्रगट करता है।

जैसे – गम – धातु से क्त (त) प्रत्यय लगाने पर गतः यह रूप होगा और क्तवतु (तवत्) यह प्रत्यय लगने पर गतवान् यह रूप होगा।

भूतकाल के चार भेद हैं

1. सामान्य भूतकाल – सः पठितवान् (उसने पढ़ा)
2. पूर्ण भूतकाल – सः पठितवान् आसीत् (उसने पढ़ा था)
3. आसन्न भूतकाल – सः पठितवान् अस्ति (उसने पढ़ा है)
4. संदिग्ध भूतकाल – सः पठितवान् भवेत् (उसने पढ़ा होगा)

3. भविष्यत् कालिक कृदन्त – भविष्यतकालिक लृट्लकार के स्थान पर स्य (ष्य) विकरण प्रत्यय लगाकर क्रमशः शतृ और शानच् प्रत्यय द्वारा परस्मैपद और आत्मनेपद का बोध किया जाता है।

परस्मैपद – शतृ प्रत्यय का प्रयोग
सः पठिष्यन् (वह पढ़ने वाला है)
सा पठिष्यन्ती (वह पढ़ने वाली है)

आत्मनेपद– शानच् प्रत्यय का प्रयोग
सः पठिष्यमानः (वह पढ़ने वाला है)
सा पठिष्यमाना (वह पढ़ने वाली है)

4. पूर्व कालिक कृदन्त – (क्त्वा, ल्यप्, प्रत्यय का प्रयोग)

वाक्य में एक क्रिया के समाप्त होने पर दूसरी क्रिया आती है, तब पूर्व कालिक कृदन्त होता है। क्रिया को प्रगट करने के लिये क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

जैसे – वह पढ़ कर खायेगा। सः पठित्वा खादिष्यति। यदि कोई उपसर्ग पूर्व में रहे तो क्त्वा को ल्यप् हो जाता है।

यथा – सः प्रपठ्य खादिष्यति।
सः पठित्वा खादिष्यति।

5. उत्तरकालिक कृदन्त – (तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग)

तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग किसी निमित्त पर हेतु वाचक कृ गम् आदि धातुओं की सहायता से प्रगट होता है।

यथा – कर्त्तुमिच्छति , गन्तुमिच्छति
1. सः गन्तुमिच्छति
2. रामः कर्तुमिच्छति

6. तव्यत् –तव्य – अनीयर (अनीय) (भाव व कर्मवाच्य में प्रयुक्त होते हैं)

सकर्मक धातु – कर्मवाच्य
एकवचन में – मया पुस्तकं पठितव्यम्। (मुझे पुस्तक पढ़नी चाहिए)
द्विवचन में – मया पुस्तके पठितव्ये। (मुझे दो पुस्तकें पढ़नी चाहिए)
बहुवचन में – मया पुस्तकानि पठितव्यानि। (मुझे पुस्तकें पढ़नी चाहिए)

अकर्मक धातु भाववाच्य

मया गन्तव्यम्।	मुझे जाना चाहिये।
युष्माभिः गन्तव्यम्।	तुम सब को जाना चाहिये।
त्वया गन्तव्यम्।	तुम्हें जाना चाहिए।

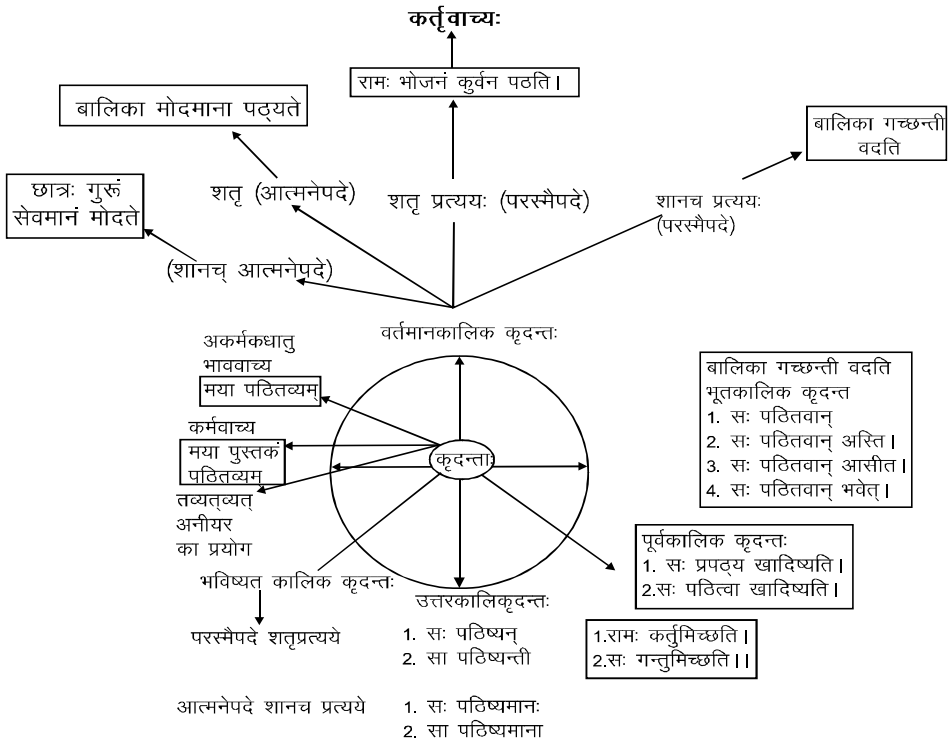

इकाई – 4

19. मात्रिक एवं वर्णिक छन्दों का कैसे बोध कराये :–

शब्द तथा मात्रा के नियमों से युक्त अभिव्यक्ति को छन्द कहा जाता है। छन्द का अर्थ ..... छन्दयति (आह्लादयति) इति छन्दोऽथवा छन्द्यतेऽनेनेति छन्दः। (छन्दः पादौ तु वेदस्य) छन्द में लय, गति, आरोह–अवरोह आदि होता है।

छन्द दो प्रकार के होते हैं –

1. मात्रिक छन्द 2. वर्णिक छन्द

जहाँ मात्राओं की गिनती की जाती है, उसे मात्रिक छन्द एवं जहाँ वर्ण या अक्षर की गणना की जाती है उसे वर्णिक छन्द कहते हैं।

सर्वप्रथम छात्रों को सरलतापूर्वक मात्रिक छन्द का बोध कराने के लिए उन्हें उदाहरण में मात्रा लगाने के नियम का अभ्यास कराना चाहिए यथा :–

अधरः किसलयरागः कोमलविटमानुकारिणौ बाहू।
कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम् ।।

इसी प्रकार अन्य उदाहरणों को लिखकर मात्रा लगाने के लिए प्रेरित करें, जिससे मात्रिक छन्द में सही ढ़ंग से मात्रा लगाना सीख सकेंगे।

इसी तरह वर्णिक छन्द का ज्ञान भी सरलता पूर्वक कराने के लिए उदाहरण के लिए वर्ण की गिनती करने के लिए अभ्यास दिया जा सकता है।

उदाहरण – यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।

उक्त उदाहरण अनुष्टुप छन्द का है। इसके प्रत्येक चरण का पंचम वर्ण लघु होता है, द्वितीय तथा चतुर्थ चरण का सप्तम् वर्ण भी लघु होता है। इसके प्रत्येक दिये गये उदाहरण को विद्यार्थियों के द्वारा चिन्हांकित करने के लिए शिक्षक निर्देशित करेंगे।

अधिकाधिक उदाहरणों का संकलन करने हेतु विषय शिक्षक छात्रों को प्रेरित करेंगे जिससे छात्र मात्रिक एवं वर्णिक छन्दों का ज्ञान सरलतापूर्वक प्राप्त कर सकें।

20. उपेन्द्रवज्रा,द्रुतविलम्बित तथा वसंततिलका छन्दों का ज्ञान बच्चों को कैसे कराएँ।

छात्रों को उपेन्द्रवज्रा, द्रुतविलम्बित तथा वसन्ततिलका छन्दों का ज्ञान पहले उन छन्दों के लक्षण बताने के पश्चात् उसके उदाहरण के माध्यम से लक्षण के अनुकूल वर्णों का चिन्हांकन कर कराना चाहिए इससे विद्यार्थी सरलता एवं मनोयोगपूर्वक समझने का प्रयास करेंगे।

लक्षण को सूत्रात्मक शैली में ज्ञान कराने से यह कार्य और अधिक आसान हो जाता है।

1. उदाहरणार्थ उपेन्द्रवज्रा छन्द का लक्षण इस प्रकार बताया जा सकता है –

1. उपेन्द्रवज्राः–''उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ''अर्थात् उपेन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण तथा दो गुरू होते हैं।

उदाहरण–

जितो जगत्येष भवभ्रमस्तैर्गुरूदितं ये गिरिशं स्मरन्ति ।

उपास्यमानं कमलासनाद्यैरूपेन्द्रवज्रायुधवारिनाथैः ।।

2. द्रुतविलम्बित–''द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ'' अर्थात् द्रुतविलम्बित के प्रत्येक चरण में नगण, भगण, भगण और रगण के क्रम से 12 अक्षर होते है।

1. जनपदे न गदः पदमादधौ।

2. उपकृतं बहु तत्र किमुच्यते।

3. किं दधौ वडवा वडवानलात।

उक्त उदाहरण लक्षण के अनुसार है छात्रों को उसके लक्षण के अनुसार वर्णगणना करने हेतु अभ्यास कराया जावे।

3. वसंततिलका – ''उक्ता वसंततिलका तभजा जगौ गः'' अर्थात् वसन्ततिलका के प्रत्येक चरण में तगण, भगण, जगण और गुरू के क्रम से 14 वर्ण होते हैं।

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं,
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति ।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं,
सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ।।

उक्त उदाहरण में लक्षणानुसार वर्ण की गणना छात्र कर सकते हैं।

वर्णों की गणना सिखाने के पहले छात्रों को गण के बारे में अवश्य ही जानकारी प्रदान की जावे, साथ ही मात्रा गिनने के नियम से परिचित कराया जाये, तो छात्र आसानी से मात्रा तथा गण के अनुसार वर्णों को गिनने में सक्षम हो सकेंगे। अतएव विषय शिक्षक को छन्द सम्बन्धी ज्ञान कराने के पहले उक्त प्रकरणों का अध्ययन कराना आवश्यक होगा। ताकि मात्राओं की गणना एवं प्रत्येक गण की मात्राओं से भी अवगत हो सकेगे? जिससे इसका लाभ उन्हें छन्दों के अध्ययन में अवश्य प्राप्त होगा।

21.अनुप्रास, यमक व श्लेष अलंकारों के माध्यम से काव्यगत रसानुभूति का बोध :–

शब्दगत और अर्थगत काव्य के सौन्दर्य में वृद्धि करने वाले तथा रसादि के उपकारक शब्द और अर्थ के धर्म अलंकार कहलाते हैं। जिस प्रकार शरीर की शोभा बढ़ाने के लिये आभूषण धारण करते हैं। उसी तरह काव्य की शोभा बढ़ाने के लिये शब्द एवं अर्थों के चमत्कार पूर्ण प्रयोग अलंकार कहलाता है।

रस एवं छन्द के अतिरिक्त अलंकार भी काव्य सौन्दर्य का एक सशक्त माध्यम है। अलंकार से युक्त शब्द अर्थ से काव्य की शोभा निश्चय ही बढ़ जाती है। उसे पढ़ने या सुनने से आनन्द की अनुभूति होती है।

अलंकार तीन प्रकार के होते हैं –

1. शब्दालंकार

2. अर्थालंकार

3. उभयालंकार

शब्दालंकार के अन्तर्गत अनुप्रास, यमक एवं श्लेष अलंकार आते हैं। इसके अतिरिक्त भी शब्दालंकार के भेद हैं।

अनुप्रास अलंकार :– जहाँ पर स्वर भिन्न होते हुए भी वर्णों का साम्य हो अथवा निरर्थक एवं सार्थक वर्णों की एक या कई बार आवृत्ति हो वहाँ पर अनुप्रास अलंकार होता है।

अनुप्रास अलंकार के भेद –

1. छेकानुप्रास
2. वृत्यानुप्रास
3. श्रुत्यानुप्रास
4. अन्त्यानुप्रास
5. लाटानुप्रास

उदाहरण –

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं
पुनरापि जननी जठरे शयनम् '
इह संसारे खलु दुस्तारे
कृपया पारे पाहि मुरारे।।

यमक – एक ही शब्द की दो या दो से अधिक बार आवृत्ति हो परन्तु अर्थ में भिन्नता हो, वहाँ यमक अलंकार होता है।

उदाहरण –

नवपलाश–नवपलाशवनंपुरः
स्फुट पराग परागतपंकजम् ।
मदुहलि – तान्त तलान्तमलोकपत् स्म
स सुरभिं सुरभिं सुमनोभरैः ।।

श्लेष – जब एक ही शब्द केवल एक बार प्रयुक्त होता है और उसके दो या अधिक अर्थ निकलते हैं, तब वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण –

मंचः कोशति किमहो प्रयासि नमां परावृत्य।
किं कातरत यैवं युह्यैति मंचः किमांलपति ।।

विषय शिक्षक अपनी कक्षा शिक्षण में छात्रों को अलंकार का ज्ञान कराने के लिए प्रत्येक अलंकार की परिभाषा एवं उदाहरण का अभ्यास कराएँ। शिक्षक स्वयं नये–नये उदाहरण के माध्यम से छात्रों को परिचित करावें तथा छात्रों को भी नवीन उदाहरण लिख कर लाने हेतु प्रोत्साहित करें। इससे छात्रों में अलंकार पढ़ने के प्रति रूचि जागृत होगी।

22. करूण रस वीर रस के माध्यम से काव्यगत रसानुभूति :–

रस को काव्य की आत्मा माना गया है । आचार्य विश्वनाथ ने काव्य की परिभाषा देते हुए कहा है कि '' वाक्यं रसात्मकं काव्यम् ''

परिभाषा –

सहृदय के हृदय में स्थित रति शोकादि का विभाव, अनुभाव, संचारी भाव से संयोग होने पर रस की निष्पत्ति होती है।

स्थायी भावों की संख्या नौ मानी गई है।

वीर रस – उत्साह नामक स्थायी भाव का विभाव अनुभाव एवं संचारी भाव का संयोग होने पर वीर रस उत्पन्न होता है।

उदाहरण – कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।।

करूण रस – शोक नामक स्थायी भाव का विभाव अनुभाव एवं संचारी भाव से संयोग होने पर

करूण रस होता है।

उदाहरण – **मा ! निषाद् प्रतिष्ठामगमः शाश्वती समाः ।**
यद् क्रोञ्चमिथुनादेकमवधीः काम मोहितम् ।।

इसी प्रकार अन्य रसों की परिभाषा एवं उदाहरण देकर विषयाध्यापक छात्रों को रस का ज्ञान करावें। नवीन उदाहरणों को संकलन करने हेतु प्रोत्साहित करें जिससे छात्र संस्कृत श्लोकों में आये हुए रसों की अनुभूति करने में छात्र समर्थ हो सकें तथा श्लोक वाचन में छात्र आनन्द की अनुभूति करें।

23. सरल संस्कृत वाक्यों में लोकोक्ति एवं मुहावरे का प्रयोग कैसे सुदृढ़ीकरण करें –

मुहावरे और लोकोक्ति – मुहावरा कुछ पदों का समूह होता है जिसका शब्दार्थ या वाच्यार्थ न लेकर लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है। 'लोकोक्ति' 'मुहावरा' से मिलती–जुलती होती है। लोकोक्ति पूरा कथन या वाक्य होता है जबकि मुहावरा अधूरा कथन या वाक्य होता है। लोकोक्ति का संबंध किसी घटना या प्रसंग से होता है, परंतु मुहावरे के विषय में कोई प्रसंग होना आवश्यक नहीं है। लोकोक्ति कभी–कभी सूक्तियाँ एवं शाश्वत कथन भी हो सकती है परंतु मुहावरा अपूर्ण वाक्य होने के कारण सूक्ति नहीं हो सकते।

1. अति लोभो न करणीयः – अत्यधिक लोभ नहीं करना चाहिए।
2 अति सर्वत्र वर्जयेत् – सभी बातों में 'अति' त्याज्य है।
3. आचारः परमो धर्मः – आचार सर्वोत्तम है।
4. चिन्ता जरा मनुष्याणाम् – चिन्ता मनुष्यों का बुढ़ापा है।
5. जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः
पूर्यते घटः – बूँद–बूँद से घड़ा भर जाता है।
6. नास्ति मोहसमो रिपुः – मोह के समान कोई शत्रु नहीं है।
7. मतिरेव बलाद् गरीयसी – बल से बुद्धि बड़ी है।
8. दूरतः पर्वता रम्याः – दूर के ढ़ोल सुहावने
9. सुखार्थिनः कुतो विद्या – सुख चाहने वाले को विद्या कहाँ ?

इस प्रकार हम देखते हैं बोल–चाल के माध्यम से अनूठी सूक्तियाँ लोकोक्ति मुहावरा नित्य ही सर्वसाधारण के सामने रहती है वास्तव में इनका प्रयोग भाषा के अलंकरण के लिए ही होता है और इससे वाणी की प्रभावशीलता बढ़ जाती है। यदि आज भी बोल–चाल और लेखन के माध्यम से लोकोक्ति एवं मुहावरे का प्रयोग किया जाय तो राष्ट्रीय चरित्र विकास, सनातन अनुभवों नीति आचार कर्त्तव्य, अकर्तव्य का ज्ञान कराया जा सकता है इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए वाक्य प्रयोग सहित कुछ सूक्तियाँ संचित हैं –

पयः पानं भुजंगानां केवलं विषवर्धनम् ।
उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ।।

जैसा कहा है कि सांपों को दूध पिलाना केवल जहर को बढ़ाना है, मूर्खों को उपदेश करना भी क्रोध को बढ़ाना है, शांति के लिए नहीं अर्थात् सांप को दूध पिलाना जैसे विष बढ़ाने वाला है, वैसा ही मूर्ख को दिया हुआ उपदेश क्रोध को बढ़ाने वाला है, शांति करने वाला नहीं।

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति ।
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः ।।
आस्वाद्यतोयाः प्रभवन्ति नद्यः ।

समुद्रभासाय भवन्त्यपेयाः ।।

गुण, बुद्धिमानों में मिल जाने से गुण हो जाते है और मूर्खों में मिल जाने से वे ही गुण दोष बन जाते है। जैसे मीठे जल वाली नदियाँ समुद्र में मिलकर खारी बन जाती है।

दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययाऽलङकृतोऽपि सन् ।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयंकरः ।।

विद्या से विभूषित होने पर भी दुष्ट मनुष्य का साथ छोड़ देना चाहिए। मणि से सुशोभित सर्प क्या भयंकर नहीं होता ?

दुर्जनेन समं सख्यं प्रीतिं चापि न कारयेत्।
उष्णो दहति चाङ्गारः शीतः कृष्णायते करम्।।

दुष्ट के साथ मित्रता और प्रीति नहीं करनी चाहिए क्योंकि गरम अंगारा हाथ को जलाता है और ठंडा हाथ को काला कर देता है।

मुहावरा	लोकोक्ति
1. अधूरा कथन या वाक्य अधूरा होता है।	1. पूरा कथन या वाक्य होता है।
2. विशेष प्रसंग की आवश्यकता नहीं।	2. इसका संबंध किसी घटना या प्रसंग से होता है।
3. सूक्ति का रूप नहीं ले सकता।	3. सूक्ति का स्वरूप भी होता है।
उदा.– बहुरत्नाः वसुन्धराः पृथ्वी में बहुत रत्न हैं।	उदा.जलबिन्दु निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः बूँद–बूँद से घड़ा भर जाता है।

गतिविधि –

1. सर्वः स्वार्थः समीहते।
2. सत्यमेव जयते नानृतम्।
3. महाजनोः येन गतः स पन्थाः।
4. सुखमुपदिश्यते परस्य।
5. विद्या धर्मेण शोभते।
6. संघे शक्तिः कलौ युगे।
7. न कूप खननं युक्तं प्रदीप्तेवह्निना गृहे।
8. विनाशकाले विपरीत बुद्धिः।
9. वीर भोग्या वसुन्धरा।
10. लोचनाभ्याम् विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति ?
11. आज्ञा गुरूणाम् ह्यविचारणीया।
12. बुभुक्षितः किं न करोति पापम् ?

चक्र में लोकोक्ति एवं मुहावरे

1. उपर्युक्त उद्धरणों से लोकोक्ति एवं मुहावरा पृथक कीजिए।
2. उद्धरणों का हिन्दी अनुवाद कीजिए।
3. इन्हें वाक्यों में प्रयोग करें।
4. पठित पाठों के आधार पर कुछ मुहावरे और लोकोक्ति स्मरण हो तो उसे लिखें।
5. हिन्दी के मुहावरे लेकर संस्कृत में रूपांतरित करें।

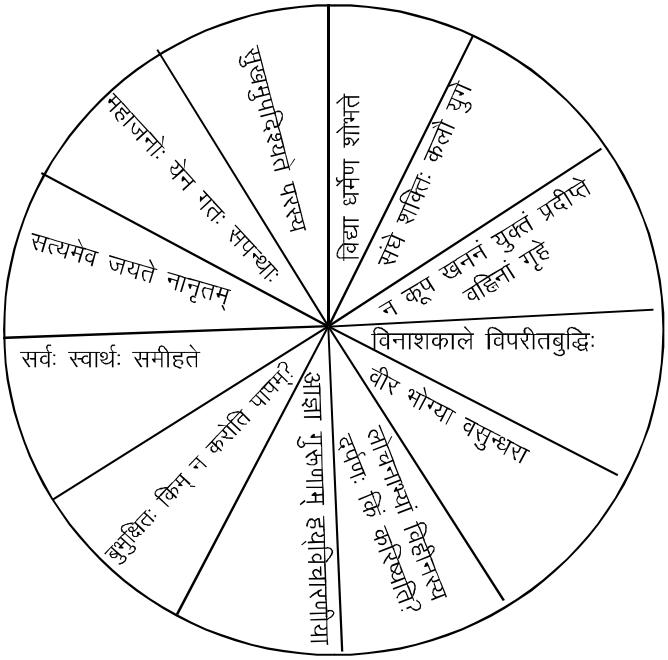

24. (1) बच्चों के ज्ञान, बुद्धि व सृजनात्मकता के लिए संस्कृत में मूल्यांकन

(2) वर्तमान संस्कृत मूल्यांकन प्रणाली

(3) विद्यालय में संस्कृत मूल्यांकन (N.C.F.) की प्रक्रिया

बच्चों के ज्ञान बुद्धि व सृजनात्मकता के लिए संस्कृत में मूल्यांकन

शिक्षा में प्रारंभ से ही परीक्षा का क्रम किसी न किसी रूप में चलता रहा है। परीक्षाओं द्वारा विद्यार्थियों के ज्ञान स्तर, बुद्धि–कौशल एवं कार्य की जाँच की जाती है। गत वर्षों में मनोवैज्ञानिकों और शिक्षा शास्त्रियों का ध्यान परीक्षा प्रणाली की ओर गया परिणामतः मूल्यांकन का नया दृष्टिकोण सामने आया। मूल्यांकन में विद्यार्थियों की योग्यता का परीक्षण करने के साथ–साथ उनकी योग्यता का लेखा भी बनाया गया। परीक्षा विद्यार्थियों की योग्यता स्तर को जाँचती है, परंतु मूल्यांकन में ऐसी जाँच के साथ–साथ यह भी देखा जाता है कि शिक्षण संबंधी उद्देश्य कहाँ तक पूरे हुए हैं। शिक्षकों को शिक्षण में कहाँ तक सफलता मिली है। विद्यार्थियों ने विषय को कहाँ तक ग्रहण किया है।

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि मूल्यांकन शिक्षण विधि को सुधारने और शिक्षा स्तर को उन्नत करने में तथा शिक्षण कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। शिक्षण कार्य में दो प्रकार का मूल्यांकन किया जाता है – (1) आंतरिक मूल्यांकन (2) बाह्य मूल्यांकन।

आंतरिक मूल्यांकन – आंतरिक मूल्यांकन विद्यार्थी की दैनिक प्रगति उसके द्वारा किये गये गृह कार्य, विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों में लिये गये भाग तथा आवधिक परीक्षाओं के परिणाम पर आधारित होना चाहिए। इस प्रकार मूल्यांकन अत्युत्तम है।

बाह्य मूल्यांकन– बाह्य मूल्यांकन विद्यालयों, शिक्षाबोर्डों तथा विश्वविद्यालयों द्वारा आयोजित परीक्षाओं के रूप में किया जाता है। परीक्षा में लिखित उत्तर अथवा किये गये कार्य के आधार पर अंक दिये जाते हैं।

सृजनात्मकता हेतु कार्य –

1. शिक्षक कक्षा में सभी बच्चों को पाठ से दो–दो वाक्य संस्कृत में बोलने के लिए कहें।
2. बच्चों को पाँच–पाँच वाक्य पढ़ने के लिए कहें।

3. पाठों के अंशों को शिक्षक स्वयं पढ़ें एवं छात्रों को श्रुति लेख के लिए कहें।

4. पाठितांश पाठ से आधारित कुछ सरल प्रश्न बच्चों को ही बनाने के लिए कहें।

5. शिक्षक बच्चों को पात्र बनाकर पाठ को अभिनय के लिए कहें।

6. कक्षा को दो समूहों में बाँटे और दोनों समूहों को प्रश्न एवं उत्तर के लिए प्रेरित करें।

7. पठित पाठ को एक समूह से वाचन करवाएँ और दूसरे समूह से उनकी गलतियों को चिह्नांकित करने के लिए कहें।

8. पठित पाठ (कहानी) जैसे कुछ अन्य कहानियाँ बच्चों से सुनाने कहें, स्वतः सुनाएँ।

9. कुछ शब्द जैसे शारीरिक अंगों के नाम, फलों के नाम जन्तुओं के नाम पूछे।

उपर्युक्त बिन्दुओं के माध्यम से कक्षा में (बच्चों) सृजनात्मकता का विकास होगा।

25. (2) वर्तमान में संस्कृत मूल्यांकन प्रणाली

1. वर्तमान संस्कृत परीक्षाओं से विद्यार्थियों की सही योग्यता की जाँच नहीं हो पाती। केवल पाँच–छः प्रश्नों के आधार पर विद्यार्थियों को उत्तीर्ण अथवा अनुत्तीर्ण घोषित कर दिया जाता है।

2. वर्तमान संस्कृत परीक्षा प्रणाली में केवल लिखित कौशल का परीक्षण हो पाता है।

3. वर्तमान संस्कृत परीक्षा रटने की प्रक्रिया को बढ़ावा देता है।

4. वर्तमान संस्कृत परीक्षा प्रणाली में संयोग काम करता है। कभी–कभी मेहनत से पढ़ने वाला विद्यार्थी अनुत्तीर्ण हो जाता है और कुछ चुनें हुए प्रश्नों को रट लेने वाला विद्यार्थी अच्छे अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण हो जाता है।

5. वर्तमान संस्कृत परीक्षा प्रणाली अविश्वसनीय है। एक परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका को दो परीक्षक यदि अलग–अलग जाँचे तो अंको में अन्तर होगा। हो सकता है एक परीक्षक उसे उत्तीर्ण करें और दूसरा अनुत्तीर्ण।

6. वर्तमान परीक्षा प्रश्न–पत्रों के निर्माण में घिसी–पिटी प्रणाली को ही अपनाया जाता है। प्रश्न पत्र निर्माता पिछले वर्षों में आये प्रश्नों को ही घुमा–फिराकर प्रश्न पत्र बना देते हैं।

7. वर्तमान परीक्षा के प्रश्न–पत्रों को हल करते समय विद्यार्थी नकल का प्रयोग करते हैं इसके लिए प्रश्न पत्रों का निर्माण कार्य भी किसी हद तक दोषी है। प्रश्न पत्रों के निर्माता इस बात का ध्यान नहीं रखते कि प्रश्न पत्र में से प्रबंधात्मक प्रश्न बनाएँ जिनके उत्तर देने में कल्पना से काम लेना पड़े, नकल से नहीं।

शिक्षा स्तर बहुत कुछ परीक्षा प्रणाली पर आधारित होता है। मूल्यांकन प्रणाली दोष रहित रहने से शिक्षण प्रणाली अपने आप सुधरेगी तथा फलस्वरूप शिक्षा स्तर भी उन्नत होगी। अतः संस्कृत परीक्षण के प्रकार हेतु निम्नांकित परीक्षण की विधियाँ दी गई हैं।

परीक्षण की सामान्य विधियाँ तीन हैं –

1. प्रबन्धात्मक विधि 2. वस्तुगत (वस्तुनिष्ठ) विधि 3. मौखिक विधि। इन तीन विधियों का संस्कृत परीक्षा प्रणाली में प्रयोग किया जाता है। संस्कृत में निबंधात्मक परीक्षा प्रणाली की रूपरेखा निम्नलिखित होनी चाहिए –

1. निबन्धात्मक परीक्षा विधि – प्रचलित संस्कृत परीक्षा प्रणाली मुख्यतः निबन्धात्मक है। निबंधात्मक परीक्षा प्रणाली में प्रश्नों के उत्तर लंबे होते हैं इस प्रकार की परीक्षा में छात्र विषय का पर्याप्त ज्ञान रखने पर भी भाषा शैली के अपरिपक्व होने पर परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाता है संस्कृत में निबन्धात्मक परीक्षाएँ निम्नांकित विषयों के मूल्यांकन के लिए आवश्यक है –

1. अक्षर विन्यास 2. लिखित अभिव्यक्ति 3. पाठ्य–पुस्तक पर आधारित विषय–वस्तु का ज्ञान

4. सार तथा भाव लेखन 5. कथा तथा घटना वर्णन 6. पत्र तथा निबन्ध रचना।

2. वस्तुगत (वस्तुनिष्ठ) परीक्षा विधि – वस्तुगत परीक्षा विधि में छोटे–छोटे प्रश्न बनाए जाते हैं। प्रश्नों के उत्तर भी छोटे होते हैं। प्रश्नों के उत्तर एक जैसे होते हैं उत्तर देने में समय कम लगता है। परीक्षा प्रश्नों को सारे पाठ्यक्रम में से चुना जा सकता है। इस परीक्षा का उपयोग संस्कृत शिक्षण में निम्नांकित विषयों के लिए किया जा सकता हैं–

1. शब्दावली का ज्ञान 2. शब्दावली का शुद्ध प्रयोग 3. अक्षर विन्यास 4. सैद्धांतिक व्याकरण 5.प्रयोगात्मक व्याकरण 6. अलंकार तथा छन्द।

3. मौखिक परीक्षा विधि – मौखिक परीक्षाएँ मौखिक परीक्षण के लिए होती है। इनमें कार्य नहीं करना पड़ता। संस्कृत उच्चारण तथा ध्वनियों के परीक्षण के लिए मौखिक परीक्षाओं की आवश्यकता पड़ती है। विषय ग्रहण, शब्दार्थ, ज्ञान वाचन में कुशलता, स्मरण क्षमता, सामान्य ज्ञान तथा मौखिक अभिव्यक्ति की जाँच के लिए इसका उपयोग किया जा सकता है।

प्रत्येक कक्षा में परीक्षा के लिए मौखिक, वस्तुगत तथा प्रबंधात्मक प्रश्नों के लिए अंक निर्धारित होने चाहिए प्रारंभिक स्तर पर मौखिक परीक्षण के लिए अधिक और प्रबन्धात्मक परीक्षण के लिए अपेक्षतया कम अंक होने चाहिए। माध्यमिक स्तर पर प्रश्न–पत्रों में वस्तुगत प्रश्न होने चाहिए। उच्च स्तर पर परीक्षा प्रश्न पत्रों में वस्तुगत प्रश्न अधिकाधिक होने चाहिए। (जिससे वर्तमान में संस्कृत की मूल्यांकन प्रणाली उपयुक्त होगी।)

26. (3) विद्यालय में संस्कृत मूल्यांकन की प्रक्रिया

संस्कृत भाषा शिक्षण में मूल्यांकन एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। मूल्यांकन में जरा सी असावधानी छात्रों के मस्तिष्क में विषय के प्रति भय का संचार करती है। छात्रों के मन में विषय के प्रति अरूचि भी उत्पन्न कर सकती है। प्रायः संस्कृत शिक्षकों की यही धारणा रहती है कि इस विषय की जाँच सख्ती से की जाय तभी भाषा में सुधार हो सकता है। संस्कृत भाषा को इस भ्रांतिपूर्ण धारणा को मन से निकाल देना अत्यंत आवश्यक है। रूढ़ मूल्यांकन की प्रक्रिया के कारण छात्र यह सोचते हैं कि इतनी मेहनत के बाद भी इस विषय में पर्याप्त अंक क्यों नहीं मिलते ? अतः संस्कृत मूल्यांकन के तरीके पर दृष्टिगोचर करना आवश्यक है –

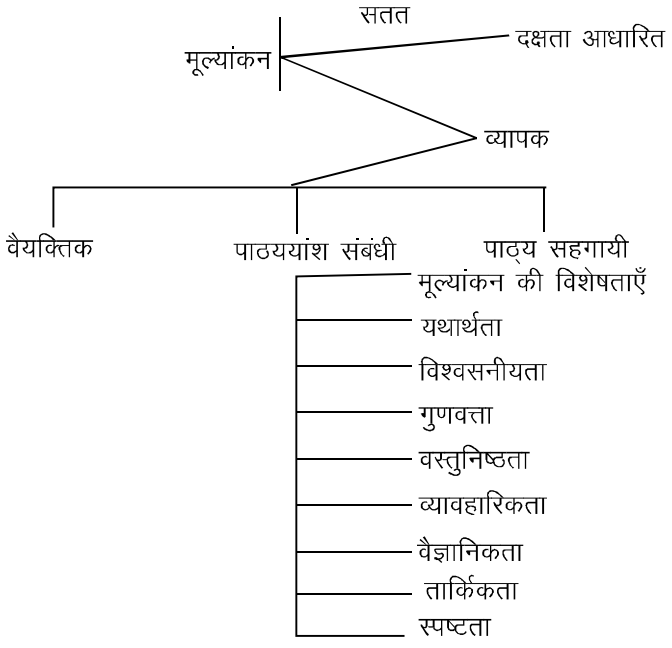

मूल्यांकन की सामान्यतः तीन विधियाँ है –

1. प्रबन्धात्मक विधि 2. वस्तुगत विधि 3. मौखिक विधि

मूल्यांकन की विधियाँ –

1. कक्षाकार्य के माध्यम से
2. लिखित कार्य के माध्यम से
3. गृहकार्य के माध्यम से
4. समूहकार्य के माध्यम से
5. पेपर पेंसिल वर्क के माध्यम से
6. अभिनय के माध्यम से
7. अवलोकन के माध्यम से
8. वार्तालाप के माध्यम से
9. वाचन के माध्यम से
10. प्रश्नोत्तर के माध्यम से
11. अभिव्यक्ति के माध्यम से
12. अभ्यास कार्य के माध्यम से

उपर्युक्त बिन्दुओं को विद्यालय के संस्कृत की कक्षाओं में प्रचलित किया जाना समीचीन होगा।

इकाई – 5

27. हरबर्टीय पञ्चपदीय पाठ योजना के माध्यम से बच्चों में अनुकरणवाचन, बोध प्रश्न, कक्षा कार्य व गृहकार्य की क्षमता कैसे बढ़ाएँ।

हरबर्ट पञ्चपदीय पाठयोजना विधि अनुसार शिक्षण कार्य करते समय शिक्षक को यह विशेष ध्यान रखना होता है कि छात्र को पढ़ाये जा रहे अंश का बोध हो रहा है कि नहीं। छात्र पाठगत गद्यांश व पद्यांश की रसानुभूति कर पा रहें हैं कि नहीं, पाठ पर उसकी अवधारणा स्पष्ट हो रही है, कि नहीं, इन सभी बातों की जानकारी के लिए छात्रों को अनुकरण–वाचन का पर्याप्त अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। शिक्षक स्वयं आदर्शवाचन स्पष्टता पूर्वक करेंगे ताकि छात्र अनुकरण वाचन के समय शुद्धोचारण के साथ स्वयं वाचन करने में समर्थ हो सके।

हरबर्ट पञ्चपदीय में अनुकरण वाचन बोधप्रश्न, कक्षाकार्य एवं गृहकार्य से क्षमता विकास को समझाने के लिए गद्य अथवा पद्य के उदाहरण के माध्यम से इस प्रकार स्पष्ट कर सकते हैं।

उदाहरण – कक्षा – आठवीं का दशम पाठः, राष्ट्रीयः सञ्चय का कुछ अंश :–

ख्यातिः – गुरो ! अस्मिन् वृक्षे ...
.....
.....
.....अस्मान् उपदिशतु।

पाठयोजनानुसार संस्कृत शिक्षण

संस्कृत शिक्षण की अपनी एक विशिष्ट शैली है। किसी भी पाठ को पढ़ाने के लिए विषय शिक्षक को पूर्व में ही योजना बनानी पड़ती है। यह योजना हरबर्ट पञ्चपदीय बालकेन्द्रित अथवा दैनिक शिक्षण योजना के आधार पर होती है। हरबर्ट पञ्चपदीय योजना के अनुसार पाठ को पढ़ाने से छात्रों की क्षमता विकास के लिए अनुकरण–वाचन, बोधप्रश्न, कक्षाकार्य एवं गृहकार्य का अत्यन्त महत्व होता है। अतएव हरबर्ट पञ्चपदीय योजना के अनुसार अध्यापन करते समय विषय शिक्षक को अत्यन्त सावधानीपूर्वक शिक्षण कार्य का संपादन करना होगा, जिससे छात्र द्वारा पठित पाठ में उनकी दक्षता का विकास हो सके।

उक्त अंश को सर्वप्रथम शिक्षक इस प्रकार से वाचन करे, कि श्रवण के साथ काव्य सौन्दर्य का अनुभव कर सके। शिक्षक के पढ़ने की शैली से छात्रों में स्वयं पढ़ने के उत्साह का सञ्चार होने लगे, तब हम यह कह सकेंगे, कि आदर्शवाचन से कक्षा का वातावरण पूर्णरूप से आनंददायी है, तथा छात्र स्वयं अनुकरण वाचन करने हेतु उत्कंठित हो रहें हैं। इस प्रकार आदर्शवाचन पूर्ण करने के पश्चात् छात्रों को अनुकरण वाचन का अवसर दिया जावे।

अनुकरण वाचन के माध्यम से छात्रों में निम्नांकित क्षमता का विकास होगा –

1. छात्र शुद्धोचारण के साथ पठन कर सकेंगे।
2. छात्र आरोह एवं अवरोह पूर्वक वाचन कर सकेंगे।
3. छात्र पाठ्यांश में आये हुए संधि एवं समास युक्त शब्दों का शुद्ध उच्चारण कर सकेंगे।
4. पाठ्यांश के कठिन शब्दों की पहचान कर सकेंगे।
5. पाठ्यांश के रसानुभूति एवं काव्य सौन्दर्य का बोध कर सकेंगे।

अनुकरण वाचन के पश्चात् विषय अध्यापक पठित अंश में आये हुए कठिनाई को छात्रों से आमंत्रित करें तथा श्यामपट पर उसका निवारण करें, इस कार्य के बाद पाठ्यांश का हिन्दी में व्याख्या या अनुवाद छात्रों को समझाएँ, ताकि छात्र स्वयं पठित अन्विति का हिन्दी में अर्थ व्यक्त करने में सक्षम हो जावें।

छात्रों की समझ पठितांश पर स्पष्ट रूप से बन पाई है या नहीं इसे जानने के लिए विषय अध्यापक को बोध प्रश्न अवश्य करना चाहिए। उदाहरण में दिये हुए पाठ के अनुसार कुछ बोध प्रश्न इस प्रकार हैं –

1. वृक्षे किं लम्बते ?
2. मधुकोशः कस्मात् निर्मितः ?
3. मधुमक्षिकाः किम् एकत्रितं कुर्वन्ति ?
4. जल बिन्दु निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः इति वाक्यस्य अर्थो लेख्यः ?

उपर्युक्त बोध प्रश्न से निम्नांकित दक्षता छात्रों में विकसित होगी –

1. छात्र पठितांश को सम्यक् रूप से समझ गये हैं इसका ज्ञान होगा।
2. पाठ्यांश का हिन्दी अनुवाद करने की दक्षता का विकास होगा।
3. छात्र संस्कृत में उत्तर देने में समर्थ हो सकेंगे।
4. छात्रों में भावों को समझने की दक्षता विकसित होगी।

बोध प्रश्न के उपरान्त छात्रों के मूल्यांकन के लिए कक्षा कार्य करना आवश्यक है, इससे छात्र पढ़ाये गये अंश का सम्यक् रूप से अवबोध कर सका है अथवा नहीं इसका ज्ञान होगा। कक्षा कार्य निम्नानुसार कराया जा सकता है –

1. श्यामपट पर प्रश्न लिखकर हल करना।
2. अभ्यास पुस्तिका में प्रश्न लिखकर हल कराया जाना तथा शिक्षक द्वारा उसकी जाँच करना।

कक्षा कार्य के प्रश्न –

रिक्त स्थानों की पूर्ति करो –

1. कोऽपि मधुगृहीतुम् आयाति ..... तं दशन्ति।
2. शनैः–शनैः ..... मधुकोशः जायते।
3. अहं ..... पीडित जनानां सेवार्थं इदं ..... समर्पयिष्यामि।
4. कृपया भवान् तद् विषये अस्मान् .....।
5. ..... प्रयोगं कथं करिष्यसि।

कक्षा कार्य से निम्नांकित कौशलों का विकास होगा –

1. वाचन कौशल का विकास।
2. पाठ्यांश का पुनरावृत्ति का अभ्यास होगा।
3. पठितांश से प्रश्नों का उत्तर देने का कौशल का विकास।
4. कठिन शब्दों के भावों को समझने की क्षमता का विकास।

कक्षा कार्य के जाँच सम्पन्न होने के पश्चात् छात्रों को गृहकार्य देना आवश्यक है, जिससे छात्र पढ़े हुए अंश को घर में जाकर पुनरावृत्ति कर सके तथा उस अंश के बारे में अवधारणा को पुष्ट कर सके।

गृहकार्य के प्रश्न –

1. पढ़े हुए अंश के आधार पर कल्पना करते हुए एक चित्र बनाइए जिसमें वृक्ष में मधुकोश मधुमक्खियाँ हो तथा जिसमें जिज्ञासापूर्ण छात्रों की सहभागिता हो।
2. पठितांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।
3. पाठ्यांश में आए हुए नवीन शब्दों के अर्थ हिन्दी में लिखिए।
4. पाठ्यांश में आए हुए संधेय एवं सामासिक शब्दों को पहचान कर लिखिए।

गृहकार्य से छात्रों में निम्नांकित योग्यता का विकास होगा –

1. संस्कृत लेखन क्षमता का विकास होगा।
2. समग्र पाठ्यांश के नवीन शब्दों के अर्थ जानने की योग्यता विकसित होगी।
3. पठितांश को हिन्दी में अनुवाद करने की योग्यता बढ़ेगी।
4. व्याकरण ज्ञान की योग्यता विकसित होगी।
5. संचय या बचत की प्रवृत्ति विकसित होगी।

यदि इस प्रकार क्रमिक रूप से हरबर्ट के पञ्चपदीय आधार पर विषय शिक्षण किया जाता है तो निश्चय ही छात्रों में अनुकरण वाचन, बोध प्रश्न कक्षा कार्य एवं गृहकार्य से छात्रों में श्रवण, वाचन, पठन व लेखन आदि भाषायी कौशलों का सम्यक् विकास होगा। अतएव विषय शिक्षक संस्कृत शिक्षण को रूचिकर व आनंददायी बनाने के लिए इसका उपयोग कर सकते हैं।

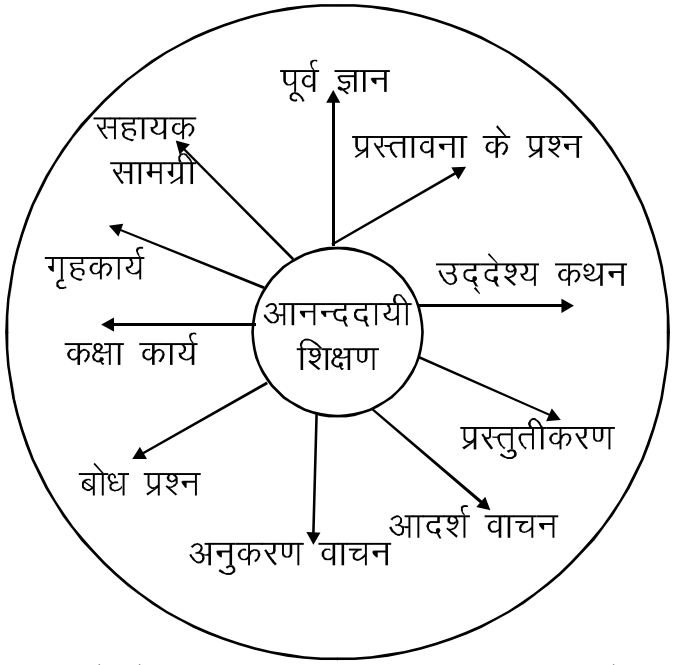

उक्त क्रम से अध्यापन करने से शिक्षण रूचिकर एवं आनन्ददायी हो सकेगा। छात्र अध्ययन में आनन्ददायी वातावरण का अनुभव कर सकेंगे।

28. बाल केन्द्रित पाठयोजना के माध्यम से बच्चों का मूल्यांकन कैसे करें –

पाठदाता – कक्षा
अनुक्रमांक – कालखण्ड
विषय – समय
प्रकरण – औसत आयु
शाला का नाम – दिनांक

प्रवेशीय दक्षता

1. छात्र स्वर और व्यंजन के विषय में सामान्य ज्ञान रखते हैं।
2. छात्र ह्रस्व एवं दीर्घ स्वरों के उच्चारण के बारे में जानते हैं।
3. छात्र सुभाषित वचनों के विषय में सामान्य रूप से ज्ञान रखते हैं।
4. छात्र आचार से संबंधित बातों को जानते हैं।

अपेक्षित दक्षता

1. छात्र यति गति व लय के अनुसार श्लोकों का उच्चारण कर सकेंगे।
2. छात्र काव्यगत सौंदर्य की अनुभूति कर सकेंगे।
3. छात्र श्लोकों मे निहित भावों को आचरित कर सकेंगे।
4. छात्र व्याकरणगत विधाओं का बोध कर सकेंगे।
5. सूक्ति वाक्य से परिचित हो सकेंगे।
6. विषय वस्तु से आधारित प्रश्नों का निर्माण कर सकेंगे।
7. श्लोक को कण्ठस्थ कर सकेंगे।

समस्या का प्रस्तुतीकरण

1. वयं रामनवमीं कदा मन्यामहे ? (भगवतः रामस्य जन्मदिवसः)
2. जन्माष्टम्याः मान्यतायाः किं कारणम ? (श्री कृष्णस्य जन्म–दिवसः)
3. महाभारतस्य युद्धं कयोः मध्येऽभवत् ? (कौरवपाण्डवयोः मध्ये)
4. अर्जुनः को आसीत् ? (कृष्णस्य सखा आसीत्)
5. भगवान् कृष्णः अर्जुनं किं उपदिशति ? (गीतां उपदिशति)

उद्देश्य कथन – अद्य वयं गीताऽमृतम् इति पाठं पठिष्यामः

व्यूह रचना –

पाठ्य वस्तु – वासांसि जीर्णानि ..... देहि

अधिगम प्रतिफल

1. छात्र गीता ग्रथं से परिचित हो सकेगा।
2. शरीर की तुलना पुरानी वस्तु से की गई है छात्र इसका ज्ञान प्राप्त कर सकेगा।
3. आत्मा कभी मृत नहीं होता यह समझ सकेगा।
4. जीवात्मा एक समय के बाद दूसरे शरीर को धारण करता है। यह समझ सकेगा।
5. श्लोक पढ़कर स्वतः रसानुभूति कर सकेगा।
6. छात्र गीता के श्लोकों में समाहित भाव को समझकर इसे जीवन में उतार सकेगा।

शिक्षक कार्य

1. शिक्षक श्लोकों का लय, गति व यति के अनुसार सस्वर वाचन करेंगे।
2. शिक्षक आदर्श वाचन के पश्चात् छात्रों को पाठ से संबंधित प्रश्न पूछे और चर्चा करें।
3. शिक्षक कक्षा को दो समूहों में विभाजित कर श्लोकों का वाचन करायें।
4. एक समूह वाचन करें और दूसरा समूह अर्थ बतायें।
5. शिक्षक गीता के श्लोकों के अन्तर्गत समाहित भावों को समझाकर उसे जीवन में उतारने की प्रेरणा दें।
6. व्याकरणगत कठिन अवधारणाओं को स्पष्ट करेंगे।

वासांसि – कपड़े

जीर्णानि – फटे–पुराने
विहाय – छोड़कर
गृह्णाति – ग्रहण करता है
संयाति – प्राप्त करता है।
देहि – शरीर

प्रश्न 1. एतयोः श्लोकयोः वक्ता कोऽस्ति (कृष्णः)
प्रश्न 2. एतयोः श्लोकयोः कः कथयति (कृष्णः)
प्रश्न 3. सः कं कथयति (अर्जुनम्)
प्रश्न 4. कीदृशं शरीरं विहाय देहि नवशरीरं धारयति ? (जीर्णं शरीरं)

मूल्यांकन

प्रश्न. कृष्णः कं उपदिशति।
प्रश्न. वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि ..... नरोऽपराणि।
प्रश्न. संधि विच्छेद कीजिए – नरोऽपराणि, जीर्णान्यन्यानि।

गृहकार्य

1. नैनं छिन्दन्ति ..... मारूतः।
2. जातस्य हि ..... शोचितुमर्हसि।

उपयुक्तौ एतौ दौ श्लोकौ कण्ठस्थं कुर्यात्।
कण्ठस्थीकरणम् कुर्यात्

संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

प्रश्न. मानव नये वस्त्रों को ग्रहण करता है।
प्रश्न. मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागता है।

पाठदाता के हस्ताक्षर

पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर

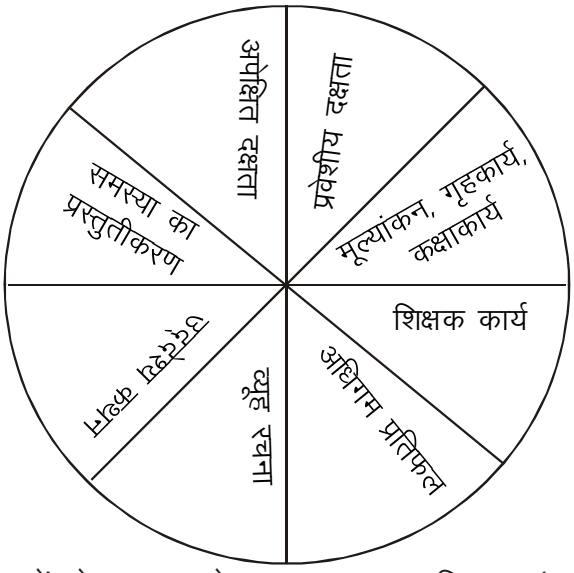

इस तरह से उक्त बिन्दुओं के माध्यम से अध्यापन द्वारा शिक्षक (बाल केन्द्रित पाठ योजना) को रूचिकर रूप से संपादित कर सकता है।

29. रचना पाठ योजना के माध्यम से बच्चों में किन–किन व्याकरणिक अवधारणाएँ पुष्ट की जा सकेंगी।

व्याकरणिक अवधारणा

व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः अनेनेति इति व्याकरणम् अर्थात् शब्दों या वर्णों की व्युत्पत्ति एवं व्याख्या (विस्तार) एवं अर्थ बोधार्थ हेतु विभिन्न तरीके अपनाये जाते हैं वही व्याकरण है। व्याकरण के बिना संस्कृत का ज्ञान कर पाना संभव नहीं है। अतएव छात्रों को व्याकरण का ज्ञान कराना अत्यावश्यक है। संस्कृत व्याकरण अत्यन्त वृहत् है। यहाँ पर उदाहरणार्थ संधि प्रकरण को आधार बनाकर बालकेन्द्रित पाठयोजनानुसार संस्कृत व्याकरण शिक्षण को किस तरह आनंददायी बनाया जाये, जिससे छात्र व्याकरण के ज्ञान से परिपूर्ण हो सके तथा संस्कृत भाषा के प्रति उनकी रूचि जागृत हो सके।

बालकेन्द्रित पाठयोजना में बच्चों की सीखने की क्षमता बालक पर ही केन्द्रित होती हैं। शिक्षक इस योजना में मार्गदर्शक या सुविधादाता के रूप में होता है। इसमें बालक की प्रवेशीय क्षमता क्या है? तथा अपेक्षित क्षमता क्या होना चाहिये, इसे ध्यान में रखते हुए विषय का शिक्षण किया जाता है। उदारणार्थ छात्रों को व्यञ्जन संधि का अध्ययन कराना है तो उसकी प्रवेशीय क्षमता इस प्रकार होगी –

प्रवेशीय क्षमता –

1. छात्र संधि की परिभाषा जानते हैं।
2. छात्र सन्धि के प्रकारों से परिचित हैं।
3. छात्र स्वर सन्धि की परिभाषा से अवगत है।
4. छात्र स्वर सन्धि के प्रकारों से भिज्ञ हैं।
5. छात्र स्वर संधि के प्रकारों के आधार पर संधि करना एवं संधि विच्छेद करना जानते हैं।

इस प्रकार उक्त प्रवेशीय क्षमता को ध्यान में रखते हुए आगे व्यञ्जन संधि के अध्यापन में उनमें कौन–कौन सी क्षमता विकसित होगी इसका निर्धारण किया जाता है जिसे अपेक्षित क्षमता कहते हैं।

अपेक्षित क्षमता –

1. छात्र व्यञ्जन सन्धि की परिभाषा से परिचित होंगे।
2. छात्र व्यञ्जन संधि के नियमों को जान सकेंगे।
3. व्यञ्जन संधि के नियमों के अनुसार व्यञ्जन संधि से संबंधित उदाहरणों को पहचानने में समर्थ हो सकेंगे।
4. व्यञ्जन संधि संबंधी उदाहरणों के सन्धि तथा संधि विच्छेद कर सकेंगे।
5. व्यञ्जन संधि से संबंधित नियमों को आत्मसात् कर सकेंगे।

अपेक्षित क्षमताओं के पश्चात् समस्या का प्रस्तुतीकरण किया जाता है, इसके अन्तर्गत पढ़ाये जाने वाले अंश से संबंधित कुछ प्रश्न किये जाते हैं। तत्पश्चात् समस्या कथन करते हुए पढ़ाये जाने वाले विषयवस्तु का अध्ययन कराया जाता है। यहाँ पर व्यञ्जन संधि को पढ़ाने के पूर्व कुछ इस तरह का प्रश्न किया जा सकता है –

1. 'संधि' का शाब्दिक अर्थ क्या है ?
2. कितने वर्णों के मेल को सन्धि कहते हैं ?
3. दो स्वरों के मेल से कौन सी सन्धि होती है ?
4. क्, ख्, ग्, घ् आदि वर्ण को क्या कहते हैं ?

यदि चौथे प्रश्न का उत्तर छात्र व्यञ्जन देते हैं तो विषय अध्यापक यहाँ अपनी समस्या कथन कर सकता है तथा छात्रों को आज व्यञ्जन संधि के विषय में पढ़ेंगे, यह बता सकते हैं। इसके बाद प्रस्तुतीकरण के अन्तर्गत इस कालखण्ड में पढ़ाये जाने वाले पाठ्यांश को लिखना होगा।

उदाहरण – व्यञ्जन सन्धि के प्रथम नियम

श्चुत्व .....लत्व तक के नियम सात तक।

प्रत्येक नियम की जानकारी व उसका उदाहरण छात्रों को समझाना होगा।

उदाहरण – प्रथम नियम – सकार या तवर्ग का शकार चवर्ग के साथ आगे या पीछे योग हो तो 'स्' का 'श' और त वर्ग च वर्ग में परिवर्तित हो जाता है।

उदाहरण – मनस् + चलति = मनश्चलति

रामस् + शेते = रामश्शेते

सत् + चरित्रम् = सच्चरित्रम्

इसी प्रकार अन्य सभी नियमों की जानकारी देते हुए उदाहरणों से परिचित करायेंगे।

निर्दिष्ट कार्य – इसके अन्तर्गत छात्रों को कक्षा में हल करने के लिए प्रश्न दिये जाते हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं –

1) व्यञजन संधि की परिभाषा लिखिए।

2) व्यञजन संधि के ष्टुत्व संबंधी नियम क्या है ?

3) वाक् + ईशः , धनुस् + टंकार की संधि कीजिए।

निर्दिष्ट कार्य के माध्यम से निम्नांकित व्याकरिणक क्षमता का विकास होगा –

1) व्यञ्जन संधि की जानकारी प्राप्त होगी।

2) व्यञ्जन संधि के प्रमुख नियमों का ज्ञान होगा।

3) व्यञ्जन संधि के उदाहरण पहचानने की क्षमता विकसित होगी।

प्रदत्त कार्य

1. व्यञ्जन सन्धि के चौथे नियम को उदाहरण सहित लिखिए।
2. व्यञ्जन सन्धि के 'जश्त्व' संबंधी नियम को स्पष्ट कीजिए।
3. व्यञ्जन सन्धि के पाँच नियमों को उदाहरण सहित लिखिए।

इससे छात्रों में निम्नांकित व्याकरणिक कौशल का विकास होगा –

1. छात्र व्यञ्जन संबंधी किसी भी उदाहरण को पहचान कर सकेंगे।
2. व्यञ्जन संधि का विच्छेद एवं सन्धि करने में समर्थ हो सकेंगे।
3. पाठ्यपुस्तक में आये व्यञ्जन संधि संबंधी उदाहरणों को छात्र सरलतापूर्वक जान सकेंगे।
4. व्यञ्जन संधि संबंधी अवधारणा स्पष्ट होगी।

इसी प्रकार समास, कारक, धातुरूप, काल, क्रिया, वचन, लिंग एवं वाच्य संबंधी व्याकरण पाठों को भी बालकेन्द्रित शिक्षण विधि के माध्यम से पढ़ाया जा सकता है। इससे छात्र संस्कृत के व्याकरण को हृदयंगम कर सकेंगे।

इकाई – 06

31. संस्कृत निबंध के माध्यम से बच्चों में सरल निबंध लेखन क्षमता का विकास कैसे करें–

रचना की दृष्टि से निबंध का महत्वपूर्ण स्थान है। निबंध, प्रबंध, रचना लेख आदि सभी समानार्थक शब्द हैं।

विशेषताः–किसी विषय पर अपने विचारों को क्रमबद्ध, सुसंस्कृत सुन्दर भाषा में लेखन संस्कृत निबंध के महत्व को प्रतिपादित करता है।

निबंध मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं –

1. वर्णनाात्मक निबंध –
2. कल्पनात्मक निबंध –
3. विवरणात्मक निबंध –

सरल निबंध लेखन क्षमता का विकास

1. संस्कृत निबंध लेखन के माध्यम से छात्रों में लेखन क्षमता का विकास निश्चित रूप से होता है।
2. संस्कृत निबंध लेखन से नवीन शब्द ज्ञान में वृद्धि होती है।
3. इससे अर्थ बोध की क्षमता का विकास होता है।
4. छात्रों में लेखन क्षमता का विकास होगा।

(क) विषय से संबंधित उचित शीर्षक।

(ख) निबंध के प्रस्तावना में लक्षण एवं महत्व को प्रतिपादित करना।

(ग) विवेचन में गुण एवं दोष आदि का विवरण लिखना।

(घ) निबंध की भाषा सरल, सुसंस्कृत व सुवाच्य हो।

(ङ) निबंध को अनावश्यक रूप से विस्तारित न करते हुए सरलतम शब्दों को चयन कर संक्षिप्त किया जावे।

(च) उपसंहार में निबंध की उपयोगिता एवं प्रभाव का उल्लेख होना आवश्यक होता है, जिससे अध्येता अपने दैनिक जीवन में उपयोग कर सकें।

(छ) निबंध लोक व्यवहृत घटनाओं से संबंधित हों जिससे मानवीय, नैतिक मूल्यों का विकास हो सके।

उपरोक्त तथ्यों के विकासार्थ बालकों को निबंध रचना हेतु प्रेरित करना श्रेयस्कर होगा।

उदाहरणार्थ – **।। पर्यावरण संरक्षणम्।।**

परिताश्चावरणं पर्यावरणं कथ्यते। तद् द्विविधम् भवति, प्रकृतनिर्मितम्, मानवनिर्मितम् च। यत् जलानि वायवः मृत्तिकाः वृक्षाः जीवजन्तवश्च पृथिव्यां दृश्यन्ते। तेषां परस्परसंतुलनेन अस्माकं जीवनमस्ति। असंतुलनेन च मरणं निश्चितं वर्तते। अस्मिन् संसारे औद्योगिकविकासेन, पर्यावरणप्रदूषणस्य समस्या सञ्जाता। विविधउद्योगैः नवाविष्कारैश्च वायुमण्डलं जलञ्च प्रदूषितं सञ्जातम्।

जनसंख्याविस्फोटेन,वनानां विनाशेन, वाहनानां अपरिमितेन धूमेण, पर्वतानामुत्खनेन, विषमिश्रित रसायनानाम् उपयोगेन, रेडियोविकिरणेन, ध्वनिप्रदूषणेन च सर्वत्र हाहाकाराः, रोगाः, अशान्त्यश्च व्याप्ताः दृश्यन्ते।''जीवाः पृथिव्यां कथं जीविष्यन्ति'' इयं विभीषिका समुपस्थिता साम्प्रतम्।

शिक्षक उपरोक्त निबंध का अभ्यास पठन व लेखन के द्वारा बार–बार करावें, उससे संबंधित कठिन शब्दों के अर्थ, उस विषय–वस्तु में निहित अवधारणाओं को छात्रों में भलीभाँति स्पष्ट करें। शिक्षक छात्रों को निर्दिष्ट करेंगे कि छोटे–छोटे सरल संस्कृत वाक्य में लिखें। छात्र अपनी रूचि के अनुसार सरल व छोटे–छोटे वाक्य,(संस्कृत में) अनुच्छेद लिखना प्रारंभ करें।

अनुच्छेद – मम नाम रमेशः। मम पिता कृषकः। मम गृहे अनेके पशवः सन्ति। मम माता कृषि कार्यं करोति। मम गृहे पितामह, पितामही, भ्राता, भगिनी च सन्ति। अहं अष्टम्यां कक्षायां पठामि। मम भ्राता भगिनी च विद्यालयं गच्छतः। शोभनः मे परिवारः।

इस प्रकार सरल अनुच्छेदों/श्लोकों/सूक्तियों के माध्यम से हम छात्रों को संस्कृत में निबंध लेखन का अभ्यास करा सकते हैं। कक्षा कार्य एवं गृह कार्य का अभ्यास करा सकते हैं। उन निबंधों में छोटे–छोटे प्रश्न बनते हों तो उसका उत्तर लिखने का अभ्यास भी कराया जावे जिससे छात्र निबंध के भावों से स्वयं परिचित हो सके।

उदाहरण के लिए

1. पर्यावरण असन्तुलनेन किं निश्चितं वर्तते ?
2. पर्यावरण प्रदूषणं केन भवति ?
3. जलं कथं प्रदूषणं भवति ?

रिक्त स्थानों की पूर्ति आदि कराकर छात्रों की सक्रिय भागीदारी करा सकते हैं।

जैसे –

1. परितश्चावरणं ..... कथ्यते।
2. पर्यावरणं ..... विधं भवति।
3. अस्मिन् संसारे औद्योगिकविकासेन ..... दूषणस्य समस्या सञ्जाता।
4. ध्वनिप्रदूषणेन च .....हाहाकाराः रोगाः, अशान्त्यश्च व्याप्ताः दृश्यन्ते।

उपर्युक्त अभ्यासों से छात्र निबंध लिखने के प्रति प्रोत्साहित होंगे। अतएव विषय–अध्यापक छात्रों को समय–समय पर कक्षा कार्य या गृहकार्य के रूप में सरल निबंध लिखने का अभ्यास दे सकते हैं। इससे छात्रों की रूचि निबंध लिखने के प्रति बढ़ेगी साथ ही संस्कृत वाक्य संरचना का अभ्यास भी होगा। जिससे छात्रों की लेखन क्षमता विकसित होगी।

लेखन क्षमता–विकासेन सह अन्यकौशलानां विकासः –

उपर्युक्त चित्र में दर्शाये गये बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए विषय अध्यापक छात्रों को निबंध लेखन का अभ्यास करायें तो निश्चित ही छात्रों में निबंध लेखन क्षमता के साथ तर्क, कल्पनाशीलता, चिन्तन, मनन, गायन, अभिनय, पठन, वाचन श्रवण आदि कौशलों का स्वयमेव विकास हो सकेगा।

32. सरल निबंध के माध्यम से बच्चों में सुलेख क्षमता को कैसे बढ़ाएँ –

सरल निबंध के माध्यम से छात्रों में सुलेख की क्षमता विकसित की जा सकती है। इसके लिए छात्रों को परिवेशीय, व्यावहारिक एवं विभिन्न वर्ग यथा – वृक्ष, शाक, पुष्प, शरीर के अंग सम्बन्धी, विद्यालय, फल, पशु–पक्षी आदि वर्गों से सम्बन्धित शब्दों का संस्कृत में ज्ञान होना आवश्यक है अतएव छात्रों के प्रारम्भिक ज्ञान के लिए इनका परिचय देना आवश्यक है।

विभिन्नवर्गाः

परिवेशीय शब्द	–	संस्कृत शब्दाः
सबो	–	सर्वः
बिरथा	–	वृथा
छत्री	–	क्षत्रियः
तुमन	–	त्वम्
खटिया	–	खट्वा
भाखा	–	भाषा
धरम	–	धर्मः
करम	–	कर्म
नांव	–	नाम
दरसन	–	दर्शनम्
देवाला	–	देवालयः
	वृक्षवर्गः	
चिरचिटा		अपामार्गः
पीपल		अश्वत्थः
आँवला	–	आमलकी
एरण्ड	–	एरण्डः
जामुन	–	जम्बूः
नीम	–	निम्बः
कदम	–	नीपः
	शाकवर्गः	
अलाबुः	–	लौकी
आलुम्	–	आलू
कलायः	–	टमाटर
कारवेल्लम्	–	करैला
गोजिह्वा	–	गोभी
कूष्माण्डः	–	कद्दू
मूलकम्	–	मूली
भिण्डकः	–	भिण्डी
	पुष्पवर्गः	
कनेर	–	कर्णिकारः
गेंदा	–	गन्धपुष्पम्
चम्पा	–	चम्पकः
चमेली	–	मालती
गुलाब	–	स्थलपद्म
बेला	–	मल्लिका

शरीरस्य अङ्गानि

परिवेशीय शब्द	–	संस्कृत शब्दाः
मुँह	–	मुखम्
जंघा	–	उरूः
गला	–	कण्ठः
गाल	–	कपोलः
ओष्ठ	–	ओष्ठः
घुटना	–	जानुः

सम्बन्धी वर्गः

पुत्र	–	आत्मजः (पुत्रः)
पुत्री	–	आत्मजा (पुत्री)
दादा	–	पितामहः
दादी	–	पितामही
बड़ाभाई	–	अग्रजः
छोटाभाई	–	अनुजः

विद्यालय वर्गः

अध्यापक	–	अध्यापकः
प्रिंसपल (प्राचार्य)	–	आचार्यः
छात्र	–	अध्येता (छात्रः)
छात्रा	–	अध्येत्री (छात्रा)
स्लेट	–	अश्मपट्टिका
रजिस्टर	–	पंजिका
फाउण्टेन	–	धारालेखनी

फलानि

आम	–	आम्रम
अमरूद	–	आम्रलम
तरबूज	–	तारबूजम्
अनार	–	दाड़िमम्
अंगूर	–	द्राक्षा
नारियल	–	नारिकेलम्

पक्षिवर्गः

तोता	–	कीरः
मुर्गा	–	कुक्कुटः
चील	–	चिल्ला
भौंरा	–	षट्पदः
बगुला	–	वकः

पशुवर्गः

परिवेशीय शब्द	–	संस्कृत शब्दाः
बकरा	–	अजः
घोड़ा	–	अश्वः
बैल	–	वृषभः
गदहा	–	खरः
हाथी	–	गजः
गाय	–	गौः
बिल्ली	–	मार्जारी

इस प्रकार परिवेशीय एवं विभिन्न वर्गों के संस्कृत में शब्दों का ज्ञान होने पर छात्र छोटे–छोटे वाक्यों में सरल संस्कृत में निबंध लिखकर सुलेख का अभ्यास कर सकते हैं। उदाहरण स्वरूप कुछ निबन्ध इस प्रकार हैं –

1. **मम विद्यालयः**

एषः मम विद्यालयः अस्ति।
अहम् अष्टम्यां कक्षायां पठामि।
मम कक्षायां पञ्चविंशतिः छात्राः सन्ति।
मम विद्यालये चत्वारः शिक्षकाः सन्ति।
मम विद्यालये एकः पुस्तकालयः अस्ति

2. **गृहम्**

एतत् मम गृहम्।
मम गृहं रायपुरनगरे अस्ति।
मम गृहे माता–पिता अनुज–अनुजाश्च सन्ति।
मम गृहे एकं लघु उद्यानम् अस्ति
तत्र विविधानि रम्याणि, पुष्पाणि सन्ति।
रम्याणि पुष्पाणि दृष्ट्वा मनांसि रञ्जयन्ति।

3. **धेनुः**

धुनोति प्रीणयति सा धेनुः।
धेनोः चत्वारः पादाः भवन्ति।
तस्याः द्वे श्रंगे स्तः।
सा अस्मान् दुग्धं ददाति।
धेनोः वत्सः कृषिबलानां धनमस्ति।

इसी तरह से अन्य शीर्षक का चयन कर छात्रों को छोटे–छोटे वाक्यों में निबन्ध लिखने का अभ्यास विषय शिक्षक द्वारा कराया जावे ताकि छात्र सुलेख द्वारा संस्कृत लिखने में दक्षता प्राप्त कर सकें। इस प्रकार अभ्यास से न केवल सुलेख का अभ्यास होगा, अपितु संस्कृत में शुद्ध लेखन करने का अभ्यास भी छात्रों को होगा। उक्त कार्य से छात्र मनोयोगपूर्वक आनंददायी वातावरण में संस्कृत सुलेख के प्रति आकर्षित होंगे।

गतिविधि –

उपर्युक्त परिवेशीय एवं वर्ग को छात्र ध्यान पूर्वक समझकर अपने विषय अध्यापक के सहयोग से संस्कृत शब्द भंडार में वृद्धि हेतु निरन्तर प्रयास करें तो इसका लाभ छात्रों को संस्कृत सुलेख, शब्द सुलेख एवं निबन्ध लेखन में निश्चय ही प्राप्त होगा। अतएव छात्र चित्र में दिए गए वर्ग पर शब्द भंडार वृद्धि के लिए अन्यान्य संस्कृत ग्रंथों का सन्दर्भ ग्रंथ के रूप में उपयोग कर अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकते हैं।

33. सरल संस्कृत निबंध के माध्यम से सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों का विकास कैसे करें –

''गद्यं कवीनां निकषंवदन्ति'' इस वाक्य को भारतीय विद्वानों ने गद्य काव्य के महत्व के रूप में स्वीकार किया है। यद्यपि संस्कृत साहित्य में गद्य काव्यों की बहुलता नहीं है तदपि दण्डी, सुबन्धुः वाणभट्ट आदि विद्वानों ने गद्य लेखन की महत्ता को प्रतिपादित किया। '' निःशेषेण अखिलेन बद्धयन्ते विचाराः इति निबन्धः''। अर्थात् समग्रता पूर्वक किसी विषय को लिखने की विधि को निबंध कहते हैं।

निबन्ध के भेद

1. विचारात्मक
2. वर्णनात्मक
3. आलोचनात्मक
4. आख्यानात्मक
5. भावात्मक

उपर्युक्त विचारों को ध्यान में रख कर निबंध लेखन के माध्यम से सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों के विकास हेतु विविध प्रकार से प्रयास करना चाहिये।

निबंध के विषय इस प्रकार हो सकते हैं, जिससे छात्रों में नैतिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय मूल्य जागृत हो।

तथार्हि –

सांस्कृतिक–राष्ट्रीय–नैतिक–भावनया विकासाय अधोलिखितानि उदाहरणानि अनुसरणीयानि–

1. अहिंसा परमोधर्मः।
2. परोपकाराय सतां विभूतयः।
3. सदाचारः।
4. संघे शक्तिः कलौ युगे।
5. वीरभोग्या वसुन्धरा।
6. अविचार्यं न कर्तव्यम्।
7. विद्या ददाति विनयम्।
8. उद्यमेन हि सिद्धयन्ति।
9. कर्त्तव्यपालनम्।
10. वसुधैव कुटुम्बकम्।
11. अनेकतायां एकता।
12. विश्वमङ्गल–भावना।
13. त्यागभावना।

14. समन्वयभावना।
15. समाजसेवा।
16. दीपावलिः।
17. राष्ट्रियपर्वः

उपर्युक्त शीर्षकों के माध्यम से संस्कृत में निबंध लिखने का अभ्यास संस्कृत अध्यापक द्वारा कराया जावे। इससे छात्रों में निम्नांकित सांस्कृतिक, नैतिक मूल्यों का विकास होगा –

1. अहिंसा के भाव जागृत होंगे।
2. परोपकारिता की भावना विकसित होगी।
3. सदाचार एवं अच्छे गुणों का विकास।
4. आपसी सहयोग की भावना का विकास।
5. श्रम के प्रति निष्ठा के भाव।
6. सोच एवं समझ का विकास।
7. विनम्रता की भावना विकसित होगी।
8. परिश्रम करने की भावना का विकास।
9. कर्तव्य परायणता।
10. सभी के प्रति सम्मान की भावना।
11. अनेकता में एकता के भाव का विकास।
12. विश्व कल्याण की भावना का विकास।
13. परस्पर सद्भाव।
14. सेवा की भावना।
15. सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति प्रेम।
16. राष्ट्र प्रेम की भावना।

इस प्रकार सरल संस्कृत निबंध लेखन से नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का विकास कर सकतें हैं। निबंध के शीषर्क के आधार पर विचारात्मक एवं भावनात्मक भाव प्रस्फुटित होते हैं और वे ही भाव हमें मूल्यों का ज्ञान कराते हैं। तद्यथा –

परोपकारः

परेषां उपकारः इति परोपकारः कथ्यते। कस्यचित् पुरूषस्य, समाजस्य, देशस्य वा कल्याणाय यद् किञ्चिद् अपि क्रियते तत् परोपकारः अस्ति। संसारे परोपकारस्य महिमा सर्वत्र दृष्टिगोचरः जायते। न केवलं मनुष्याणां अपितु अन्ये प्राणिनः अपि परोपकारे संलग्नाः दृश्यन्ते।

कथितञ्च

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः परोपकारार्थमिदं शरीरम् ।।

उपर्युक्त निबंध में अनेक ऐसे नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्य समाहित हैं, जिसका अनुसरण कर विद्यार्थी नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का विकास कर सकते हैं, तथा उसे अपने व्यावहारिक जीवन का अंग बना सकते हैं। विषय शिक्षक को अपने अध्यापन में

इसी प्रकार के मूल्य परक विषय का चयन कर छात्रों से सरल एवं मौलिक निबंध लेखन का अभ्यास कराना चाहिये। छात्रों द्वारा लिखे गये निबंधों की जाँच एवं मूल्यांकन अवश्य किया जाना चाहिये ताकि छात्रों की लेखन शैली एवं क्षमता का सतत विकास हो शिक्षक उनका मार्गदर्शन कर त्रुटि का निवारण करें, जिससे छात्र शुद्ध लेखन में समर्थ हो सके।

संस्कृत–भाषा–शिक्षणमाध्यमेन छात्राणां नूनमेव सर्वाङीण –विकासः दृढ़तया भवितुं शक्यते।।

। इत्यऽलम् ।।